وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦
وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَ
لَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا
عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ
بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٨

आयत न० 06 से 08

और ज़मीन पर चलने वाला कोई जानदार ऐसा नहीं कि उस की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो और (रोज़ी पहुंचाने के लिए इल्म की ज़रूरत होती है सो) **वो हर एक की ज़्यादा रहने की जगह को और कुछ दिन रहने की जगह को जानता** (है और हर एक को वहां ही रोज़ी पहुंचाता) **है,** (और सब चीज़ें अल्लाह के इल्म में तो हैं ही मगर उस के साथ ही) **सब चीज़ें किताबे मुबीन** (यानी तक़दीर की किताब) **में** (भी लिखी हुई) **हैं(06) और वो** (अल्लाह) **ऐसा है कि सब आसमान और ज़मीन को छः दिन** (के बराबर वक़्त) **में पैदा किया उस वक़्त उस का अर्श पानी पर था** (कि ये दोनों चीज़ें पहले से पैदा हो चुकी थीं यह पैदा करना इसलिए है) **ताकि तुम को आज़माए कि** (देखें) **तुम में अच्छे काम करने वाला कौन है** (मतलब यह कि ज़मीन व आसमान को तुम्हारी ज़रूरत के लिए पैदा किया ताकि उससे नफ़ा उठा कर शुक्र अदा करो ईमान लाओ और इबादत करो)**, और** (कुछ ने ऐसा किया और कुछ ने नहीं तो) **अगर आप** (लोगों से) **कहते हैं कि बेशक तुम लोग मरने के बाद** (क़ियामत के दिन दोबारा) **ज़िन्दा किये जाओगे तो** (उन में) **जो लोग काफ़िर हैं वो** (कुरआन के बारे में) **कहते हैं कि यह तो खुला जादू है** (जादू इसलिए कहते हैं कि वो झूट होता है मगर असर रखता है इसी तरह कुरआन को नऊज़ुबिल्लाह झूटा मानते थे लेकिन उस की आयतों का असर रोज़ देखते थे मगर यह कह कर आख़रत का इनकार करते थे)**(07) और अगर थोड़े दिनों तक** (यानी दुनिया की ज़िन्दगी में) **हम उन से** (आने वाला अज़ाब) **रोक लेते हैं** (कि इस में भी कुछ भेद हैं) **तो** (इनकार और दिल्लगी करते हुए) **कहने लगते हैं कि** (जब हम तुम्हारे नज़दीक अज़ाब के हक़दार हैं तो) **इस अज़ाब को कौन चीज़ रोक रही है** (यानी अगर अज़ाब कोई चीज़ होती तो अब तक आ चुका होता तो पता चला कि कुछ भी नहीं, अल्लाह तआ़ला जवाब देते हैं कि) **याद रक्खो जिस दिन** (अपने वक़्त पर) **वो** (अज़ाब) **उन पर आजाएगा तो**

फिर किसी के रोके न रूकेगा और जिस (अज़ाब) **के साथ ये दिल्लगी कर रहे थे वो उन को आघेरेगा** (मतलब यह कि अज़ाब का हक़दार होने के बावजूद यह देरी इसलिए है कि कुछ ख़ास वजह से उस का वक़्त तय है फिर उस वक़्त सारी कसर निकल जाएगी)(08)।

नोटः- एक हदीस में है कि अल्लाह तआला ने तमाम मख़लूक़ की तक़दीरें आसमान और ज़मीन की पैदाइश से भी पचास हज़ार साल पहले लिखदी थीं"। (मुस्लिम)

وَ لَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَـُٔوْسٌ كَفُوْرٌ ﴿٩﴾ وَ لَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ
مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ﴿١٠﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ
مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١١﴾ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ وَ ضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ
عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَاۤ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٢﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا
بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّ ادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٣﴾ فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا
لَكُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَاۤ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٤﴾

आयत न० 09 से 14

और अगर हम इन्सान को अपनी महरबानी का मज़ा चखा कर उससे छीन लेते है तो वो नाउम्मीद और नाशुक्रा हो जाता है(09) और अगर उस को किसी तकलीफ़ के पहुंचने के बाद किसी नेमत का मज़ा चखा दें तो (ऐसा इतराता है कि) **कहने लगता है कि मेरा सब दुःख दर्द दूर हुआ** (अब कभी न होगा), **वो इतराने लगता है शेख़ी बधारने लगता है(10)** (हां) **मगर जो लोग सब्र से काम लेते हैं और नेक काम करते** (हैं यानी मुसलमान कि उनमें कम या ज़्यादा ये आदतें होती हैं तो वो ऐसे नहीं होते बल्कि नेमत के जाते रहने के वक़्त सब्र से काम लेते हैं और नेमत के मिलने पर शुक्र और ताबेदारी करते) **हैं, ऐसे लोगों के लिए बड़ी बख़्शिश और बड़ा सवाब है(11) सो** (ये लोग जो इनकार करते व हंसी उड़ाते हैं तो) **शायद आप** (तंग होकर) **उन हुक्मों में से जो कि आप के पास वही से भेजे जाते हैं कुछ को** (यानी तबलीग़ को) **छोड़ देना चाहते हैं** (यानी क्या ऐसा हो सकता है कि आप तबलीग़ छोड़ दें सो ऐसा इरादा तो आप कर नहीं सकते फिर तंग होने से क्या फ़ाइदा) **और आप का दिल इस बात से तंग होता है कि वो कहते**

हैं कि (अगर ये पैग़म्बर हैं तो) **इन पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतारा गया या उन के साथ कोई फ़रिशता** (जो हम से भी बातें करता) **क्यों नहीं आया** (यानी ऐसे मोजिज़े क्यों नहीं दिये गये, तो ऐसी बातों से आप तंग न होजिए), **आप तो** (इन काफ़िरों को) **सिर्फ़ डराने वाले** (यानी पैग़म्बर) **हैं** (जिसके लिए असल में किसी मोजिज़े की ज़रूरत नहीं), **और हर चीज़ सिर्फ़ अल्लाह ही के क़ब्ज़े में** (है आप के नहीं जब यह बात है तो इन मोजिज़ों को दिखाना आप के बस से बाहर है फिर इस की फ़िक्र और इस फ़िक्र से परीशानी क्यों हो और चूंकि पैग़म्बर के लिए मोजिज़े की ज़रूरत होती है और आप का बड़ा मोजिज़ा क़ुरआन है तो उस को न मानने की क्या वजह) **है(12) क्या** (इस के बारे में) **यह कहते हैं कि** (नऊज़ुबिल्लाह) **आप ने इस को** (अपनी तरफ़ से) **ख़ुद बना लिया है, आप जवाब में कह दीजिए कि** (अगर ये मेरा बनाया हुआ है) **तो** (अच्छा) **तुम भी इस जैसी दस सूरतें** (जो तुम्हारी) **बनाई हुई** (हों) **ले आओ और** (अपनी मदद के लिए) **अल्लाह के सिवा जिस-जिस को बुला सको बुलालो अगर तुम सच्चे हो(13) फिर ये काफ़िर अगर तुम लोगों का** (यानी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मौमिनों का यह) **कहना** (कि इस के जैसी बना लाओ) **न कर सकें तो तुम** (इन से कह दो कि अब तो) **यक़ीन कर लो कि यह क़ुरआन अल्लाह ही के इल्म** (और क़ुदरत) **से उतरा है** (इसमें न और किसी का इल्म शामिल है न क़ुदरत) **और यह** (भी यक़ीन कर लो) **कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं,** (और उन के क़ुरआन जैसा बनाने से लाचार होने से पैग़म्बरी और तौहीद दोनो साबित हो गये) **तो अब भी मुसलमान होते हो** (या नहीं)(14)।

नोटः- यहां क़ुरआन जैसी दस सूरतें बनाने का चैलेंज दिया गया जब न कर सके तो फिर सूरत बक़र में एक सूरत बनाने को चैलेंज दिया गया मगर इससे भी लाचार हो गये तो साबित हो गया कि क़ुरआन अल्लाह का कलाम है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَ هُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿١٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَ حَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ
مِّنْ رَّبِّهٖ وَ يَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَ مِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّ رَحْمَةً ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَ مَنْ يَّكْفُرْ
بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۗ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾

आयत न० 15 से 17

जो आदमी (अपने अच्छे कामों से) **सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी** (का नफ़ा) **और उस की रौनक़** (पाना) **चाहता है** (जैसे शोहरत व नामवरी और आख़रत के सवाब की उस की नीयत न हो) **तो हम उन लोगों के** (उन) **कामों का बदला उन को दुनिया ही में पूरा-पूरा दे देते हैं और उन के लिए दुनिया में कुछ कमी नहीं होती** (यानी दुनिया ही में उन के कामों के बदले उन को नेकनामी, तन्दरूस्ती, ऐश आराम और माल व दौलत दे दिया जाता है)(15) **ये ऐसे लोग हैं जिन के लिए आख़रत में सिवाए दोज़ख़ के कुछ** (सवाब) **नहीं और उन्होंने जो कुछ किया था वो आख़रत में सब** (का सब) **बेकार** (साबित) **होगा और** (असलीयत में तो) **जो कुछ कर रहे हैं वो** (अब भी) **बेअसर है** (नीयत सही न होने की वजह से)(16) **क्या क़ुरआन का इनकार करने वाला ऐसे आदमी की बराबरी कर सकता है जो क़ुरआन के हुक्मों पर चलता हो जो कि उस के रब की तरफ़ से आया है और उस** (क़ुरआन) **के साथ एक गवाह तो उसी में मौजूद है** (यानी उस का मोजिज़ा होना जो एक अक़्ली दलील है) **और** (एक) **इससे पहले** (यानी) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की किताब** (यानी तौरेत इसके साथ गवाही के लिए मौजद) **है जो कि** (हुक्म बताने के हिसाब से) **इमाम है और** (हुक्मों पर जो सवाब मिलेगा इस हिसाब से वो किताब) **रहमत है,** (और यह दलील किताबी है बस इन दलीलों की वजह से) **ऐसे लोग** (जिन का ज़िक्र हुआ) **इस क़ुरआन पर ईमान रखते हैं, और** (काफ़िर का यह हाल है कि) **जो आदमी दूसरे गिराहों में से इस क़ुरआन का इनकार करेगा तो दोज़ख़ उस का ठिकाना है** (फिर कुरान का इनकार करने वाला क़ुरआन की तसदीक़ करने वाले के बराबर कब हुआ) **सो** (ऐ लोगों) **तुम क़ुरआन की तरफ़ से शक में मत पड़ना बेशक वो सच्ची किताब है तुम्हारे रब के पास से** (आई है) **लेकिन** (इन दलीलों के बावजूद) **बहुत से आदमी ईमान नहीं लाते**(17)।

नोटः- रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि जो यहूदी या ईसाई मेरी दावत को सुने और उस के बावजूद मेरी लाई हुई बातों पर ईमान न लाए तो वो जहन्नम वालों में से होगा"। यानी चाहे कितने ही अच्छे काम करे मगर बख़्शिश न होगी जब तक ईमान न लाए। (मुस्लिम)

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَ يَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا
عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۙ۝١٨ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ يَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ
هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝١٩ اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَ مَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ
الْعَذَابُ ؕ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَ مَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ۝٢٠ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٢١ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝٢٢ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ اَخْبَتُوْٓا
اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٢٣ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَ الْاَصَمِّ وَ الْبَصِيْرِ وَ
السَّمِيْعِ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٢٤ ع

आयत न० 18 से 24

और उस आदमी से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूट बान्धे (कि उस के एक होने का, उस के नबी की पैग़म्बरी का और क़ुरआन के उस का कलाम होने का इनकार करे), **ऐसे लोग** (क़ियामत के दिन) **अपने रब के सामने** (झूट घड़ने वाले होकर) **पेश किये जाएंगे और** (कामों के) **गवाह फ़रिशते** (खुल्लम खुल्ला) **यह कहेंगे कि ये वो लोग हैं जिन्होंने अपने रब के बारे में झूटी बातें कहीं थी, सब सुन लो कि ऐसे ज़ालिमों पर अल्लाह की** (ज़्यादा) **लानत है(18) जो कि** (अपने कुफ़्र व ज़ुल्म के साथ) **दूसरों को अल्लाह की राह** (यानी दीन से) **रोकते थे और इस** (दीन की राह) **में कमी** (और शक शुबहे) **निकालने की तलाश** (और फ़िक्र) **में रहा करते थे** (ताकि दूसरों को गुमराह करें), **और आख़रत का भी इनकार किया करते थे(19)** (आगे अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि) **ये लोग** (सारी) **ज़मीन पर कहीं भी अल्लाह तआ़ला को मजबूर नहीं कर सकते थे** (कि कहीं जा छुपते और अल्लाह तआ़ला के हाथ न आते) **और न उन का अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई मददगार हुआ** (कि गरिफ़्तारी के बाद छुड़ा लेता), **ऐसों को** (औरों से) **दूनी सज़ा होगी** (एक काफ़िर होने की और एक दूसरों को काफ़िर बनाने की कोशिश करने की), **ये लोग** (नफ़रत की वजह से अल्लाह के हुक्मों को) **सुन न सकते थे और न** (ज़िद्द की वजह से दीन की राह को) **देखते थे(20) ये वो लोग हैं जो अपने आप को बर्बाद कर बैठे और जो माबूद उन्होंने बना रक्खे थे** (आज) **उन से सब गाइब** (और गुम) **हो गये** (कोई भी तो काम न आया)**(21) इस में शक नहीं कि आख़रत में सब से ज़्यादा नुक़सान में ये ही लोग होंगे(22)**

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये और (दिल से) **अपने रब की तरफ़ झुके ऐसे लोग जन्नत वाले हैं** (और) **वो उस में सदा रहेंगे(23) दोनों गिरोहों** (यानी मोमिन व काफ़िर) **की हालत ऐसी है जैसे एक आदमी अन्धा हो और बहरा भी हो** (जो न बात को सुने न इशारे को देखे तो उस के समझाने की कोई सूरत ही नहीं) **और एक आदमी हो जो देखता भी हो और सुनता भी** (हो उस को समझना बहुत आसान) **हो, क्या ये दोनो आदमी हालत में बराबर हैं** (कभी नहीं, ये ही हालत काफ़िर और मुसलमान की है कि वो सीधे रास्ते से बहुत दूर है और ये सही रास्ते पर है), **क्या तुम** (इस फ़र्क़ को) **समझते नहीं(24)।**

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖۤ اِنِّیْ لَكُمْ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۲۵﴾ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ
یَوْمٍ اَلِیْمٍ ﴿۲۶﴾ فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَ مَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِیْنَ
هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِیَ الرَّاْیِ وَ مَا نَرٰى لَكُمْ عَلَیْنَا مِنْ فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِیْنَ ﴿۲۷﴾ قَالَ یٰقَوْمِ اَرَءَیْتُمْ اِنْ
كُنْتُ عَلٰى بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَ اٰتٰىنِیْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّیَتْ عَلَیْكُمْ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَ اَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَ
یٰقَوْمِ لَاۤ اَسْــٴَـلُكُمْ عَلَیْهِ مَالًا اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَ مَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَ لٰكِنِّیْۤ
اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَ یٰقَوْمِ مَنْ یَّنْصُرُنِیْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَ لَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ
عِنْدِیْ خَزَآىٕنُ اللّٰهِ وَ لَاۤ اَعْلَمُ الْغَیْبَ وَ لَاۤ اَقُوْلُ اِنِّیْ مَلَكٌ وَّ لَاۤ اَقُوْلُ لِلَّذِیْنَ تَزْدَرِیْۤ اَعْیُنُكُمْ لَنْ
یُّؤْتِیَهُمُ اللّٰهُ خَیْرًا اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ اِنِّیْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوْا یٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ
جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ اِنَّمَا یَاْتِیْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَ مَاۤ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِیْنَ ﴿۳۳﴾ وَ لَا یَنْفَعُكُمْ نُصْحِیْۤ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ یُرِیْدُ اَنْ یُّغْوِیَكُمْ هُوَ
رَبُّكُمْ وَ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۳۴﴾ اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ قُلْ اِنِ افْتَرَیْتُهٗ فَعَلَیَّ اِجْرَامِیْ وَ اَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿۳۵﴾

आयत न० 25 से 35

और हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) **को उन की क़ौम के पास पैग़म्बर बनाकर** (यह कहलाकर) **भेजा कि मैं तुम को** (इस बात से) **साफ़-साफ़ डराने वाला हूं(25) कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत मत करो** (और जो बुत तुम ने बना रक्खे हैं उन को छोड़ दो, वर्ना) **मुझे तुम पर एक बड़े दुख देने वाले दिन के अज़ाब का ख़तरा है(26) तो उन की क़ौम में जो**

काफ़िर सरदार थे वो (जवाब में) **कहने लगे कि** (तुम जो पैग़म्बरी का दावा करते हो तो यह बात हमारे जी को नहीं लगती क्योंकि) **हम तो तुम को अपने ही जैसा आदमी देखते हैं** (और इन्सान पैग़म्बर नहीं हो सकता) **और** (अगर कुछ लोगों ने तुम को माना भी है तो वो कोई दलील नहीं क्योंकि) **हम देखते हैं कि तुम्हारे मानने वाले वो लोग हैं जो हम में बिल्कुल गिरे हुए समझे जाते हैं** (जिन की समझ अक्सर कम होती है फिर) **वो** (मानना) **भी सिर्फ़ बेसोचे समझे** (यानी उन के ईमान का भी ऐतबार नहीं), **और हम तुम लोगों में** (यानी तुम में और मुसलमानों में) **कोई बात अपने से ज़्यादा नहीं पाते** (इसलिए तुम मुसलमानों की राय को सही नहीं समझते) **बल्कि हम तुम को** (बिल्कुल) **झूटा समझते हैं(27) नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम** (तुम जो यह कहते हो कि तुम्हारी पैग़म्बरी जी को नहीं लगती, तो) **भला यह तो बताओ कि अगर मैं अपने रब की तरफ़ से आए सीधे रास्ते पर हूं और उस ने मुझ को अपने पास से रहमत** (यानी पैग़म्बरी सबूत के साथ) **दी हो फिर वो** (पैग़म्बरी या उस की दलील) **तुम को न सूझती हो तो** (मैं क्या करूं मजबूर हूं), **क्या हम इस** (दावे या दलील) **को तुम्हारे सर ज़बरदस्ती डाल दें जब कि तुम उसे नापसन्द करते हो(28) और** (इतनी बात और कही कि) **ऐ मेरी क़ौम** (यह तो सोचो कि अगर मैं पैग़म्बरी का ग़लत दावा करता तो आख़िर इस में मेरा कुछ मतलब होता जैसे ये ही कि इससे ख़ूब माल कमाउंगा तो तुम को पता है कि) **मैं तुम से इस** (तबलीग़) **पर कुछ माल नहीं मांगता, मेरा बदला तो सिर्फ़ अल्लाह के ज़िम्मे है** (उसी से आख़रत में इस की तमन्ना रखता हूं, फिर जब कोई लालच नहीं तो फिर झूट बोलने से क्या फ़ाइदा) **और** (तुम जो छोटे लोगों को नापसन्द करते हो तो तुम्हारे कहने से) **मैं तो इन ईमान वालों को निकालता नहीं,** (क्योंकि) **ये लोग अपने रब के पास** (इज़्ज़त के साथ) **जाने वाले हैं** (और भला कोई आदमी शाही लोगों को निकाला करता है) **लेकिन असल में तुम लोगों को देखता हूं कि जहालत** (की बातें) **कर रहे हो(29) और ऐ मेरी क़ौम** (मान लो) **अगर मैं इन को निकाल भी दूं तो** (यह बताओ कि) **मुझ को अल्लाह की पकड़ से कौन बचाएगा** (क्या तुम में इतनी हिम्मत है जो ऐसे बेहूदा मशवरे दे रहे हो), **क्या तुम इतनी बात भी नहीं समझते(30)** (और) **मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह तआ़ला के ख़ज़ाने हैं और न मैं** (यह कहता हूं कि मैं) **सभी ग़ैब की बातें जानता हूं और न यह कहता हूं कि मैं फ़रिशता हूं और जो लोग तुम्हारी नज़रों में गिरे हुए हैं मैं उन के बारे में** (तुम्हारी तरह) **यह नहीं कह सकता कि** (ये लोग दिल से ईमान नहीं लाए इसलिए) **अल्लाह तआ़ला इन को कभी भी सवाब न देगा, उन के दिल में जो कुछ हो उस को अल्लाह ही अच्छी तरह**

जानता है (तो हो सकता है उन के दिलों में सच्चाई हो तो फिर मैं ऐसी बात क्योंकर कह दूं), **मैं** (अगर ऐसी बात) **कह दूं तो** (इस सूरत में) **सितम ही करूं(31)** (जब नूह अलैहिस्सलाम ने सब बातों का पूरा-पूरा जवाब दे दिया तो लाजवाब होकर) **वो लोग कहने लगे या नूह तुम हम से बहस कर चुके और बहुत बहस कर चुके सो** (अब बहस छोड़ दो और) **जिस चीज़ से हम को डराया करते हो** (कि अज़ाब आजाएगा) **वो हमारे सामने ले आओ अगर तुम सच्चे हो(32) उन्होंने कहा कि** (उस को लाने वाला मैं कौन हूं मुझको पहुंचा देने सुना देने का हुक्म था तो मैं पूरा कर चुका) **उस को अल्लाह तआला ही लाएगा अगर चाहेगा और** (उस वक़्त फिर) **तुम उस को बेबस न कर सकोगे** (कि वो अज़ाब देना चाहे और तुम न होने दो)**(33) और मेरा भला चाहना तुम्हारे काम नहीं आसकता चाहे मैं तुम्हारा कैसा ही भला चाहूं जब कि अल्लाह ही** (तुम्हारी हटधर्मी और घमन्ड की वजह से) **तुम्हें गुमराह करना चाहे, वो ही तुम्हारा मालिक है और उसी के पास तुम को जाना है(34) क्या ये लोग कहते है कि मुहम्मद** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **ने यह कुरआन अपनी तरफ़ से बना लिया है, आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि अगर** (मान लो) **मैंने बनाया होगा तो मेरा ये जुर्म मुझ पर** (वबाल) **होगा** (और तुम मेरे जुर्म से बरी होंगे) **और** (अगर तुम ने मुझ पर यह झूट लगाया होगा तो तुम्हारा यह जुर्म तुम पर पड़ेगा और) **मैं तुम्हारे इस जुर्म से बरी रहूंगा(35)।**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि ज़बरदस्ती किसी को मुसलमान बनाना किसी भी पैग़म्बर के ज़माने में जाइज़ नहीं रक्खा गया।

وَ اُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۚ (٣٦) وَ اصْنَعِ
الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَ وَحْيِنَا وَ لَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ (٣٧) وَ يَصْنَعُ الْفُلْكَ ۫ وَ كُلَّمَا مَرَّ
عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ؕ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ؕ (٣٨) فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ
مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَ يَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ (٣٩) حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَ فَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا
مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَ اَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَ مَنْ اٰمَنَ ؕ وَ مَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلٌ (٤٠)

आयत न० 36 से 40

और (जब नसीहत करते हुए एक बड़ा ज़माना बीत गया और कुछ असर न हुआ तो) **नूह**

(अलैहिस्सलाम) **के पास वही भेजी गई कि सिवाए इन के जो** (इस वक़्त तक) **ईमान ला चुके हैं और कोई** (नया) **आदमी तुम्हारी क़ौम में से ईमान न लाएगा सो जो कुछ ये लोग** (कुफ़्र व सताना और हंसी उड़ाना) **कर रहे हैं उस पर कुछ ग़म न करो** (क्योंकि ग़म तो जब होता है कि उम्मीद हो और इन से मुख़ालफ़त के सिवा कोई उम्मीद नहीं)(36) **और** (चूंकि हमारा इरादा अब इन को डुबो देने का है और इसलिए तूफ़ान आने को है बस) **तुम** (उस तूफ़ान से बचने के लिए) **हमारी देख रेख में और हमारे हुक्म से कशती तैयार कर लो** (कि इससे तुम और मुसलमान तूफ़ान से बचे रहोगे) **और** (यह सुन लो कि) **मुझ से काफ़िरों** (की मुआफ़ी) **के बारे में कुछ बात मत करना** (क्यों कि) **वो सब डुबोए जाएंगे**(37) (बस नूह अलैहिस्सलाम ने सामान जमा किया) **और कशती तैयार करने लगे** (चाहे ख़ुद या दूसरे कारीगरों से) **और** (तैयारी के वक़्त में) **जब कभी उन की क़ौम के सरदार उन के पास से गुज़रते तो** (उन को कशती बनाता देख कर और यह सुन कर कि तूफ़ान आने वाला है) **उन से हंसी करते** (कि देखो पानी का कहीं नाम निशान नहीं मुफ़्त मुसीबत झेल रहे हैं), **आप कहते कि अगर तुम हंसते हो तो हम तुम पर हंसते हैं जैसा तुम हम पर हंसते हो** (कि अज़ाब ऐसा नज़दीक आ पहुंचा और तुम को हंसी सूझ रही है)(38) **सो अभी तुम को पता चल जाएगा कि वो कौन आदमी है जिस पर** (दुनिया में) **ऐसा अज़ाब आया जाता है जो उस को रूसवा कर देगा और** (मरने के बाद) **सदा का अज़ाब आता है**(39) **यहां तक कि जब हमारा हुक्म** (अज़ाब का नज़दीक) **आ पहुंचा और ज़मीन से पानी उबलना शुरू हुआ** (और यह निशानी थी तूफ़ान शुरू हो जाने की और ऊपर से पानी बरसना शुरू हुआ उस वक़्त) **हम ने** (नूह अ़लैहिस्सलाम से) **कहा कि हर क़िस्म** (के जानवरों) **में से** (जो कि इन्सान के काम आते हैं और पानी में ज़िन्दा नहीं रह सकते) **एक-एक नर और एक-एक मादा यानी दोनों का जोड़ा इस** (कशती) **में सवार कर लो और अपने घर वालों को भी** (सवार कर लो) **सिवाए उस के जिस के लिए** (डूबने का) **हुक्म आ चुका है** (यानी उन में जो काफ़िर हो उसको सवार मत करना और घर वालों के सिवा) **दूसरे ईमान वालों को भी** (सवार कर लो), **और सिवाए थोड़े आदमियों के उन के साथ कोई ईमान न लाया था** (बस उन्हीं के सवार करने का हुक्म हो गया)(40)।

नोटः- कशती वालों की सही गिनती क़ुरआन व हदीस में नहीं बताई गई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं कि उन की कुल गिनती अस्सी आदमियों की थी।

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرٰىهَا وَمُرْسٰىهَا ۚ إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٤١﴾ وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ
كَالْجِبَالِ وَنَادٰى نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يٰبُنَيَّ ارْكَب مَّعَنَا وَلَا تَكُن مَّعَ الْكٰفِرِينَ ﴿٤٢﴾ قَالَ سَاٰوِي إِلٰى
جَبَلٍ يَعْصِمُنِي مِنَ الْمَاءِ ۚ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَن رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ
مِنَ الْمُغْرَقِينَ ﴿٤٣﴾ وَقِيلَ يٰأَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكِ وَيٰسَمَاءُ أَقْلِعِي وَغِيضَ الْمَاءُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى
الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ﴿٤٤﴾

आयत न० 41 से 44

और नूह (अलैहिस्सलाम) **ने** (सब जानवरों को सवार करके अपने मानने वालों से) **कहा कि** (आओ) **इस कशती में सवार हो जाओ** (और डूबने का खटका न करना क्योंकि) **इस का चलना आर ठहरना** (सब) **अल्लाह ही के नाम से** (है और वो ही इस की हिफ़ाज़त करने वाला) **है, बेशक मेरा रब मुआ़फ़ करने वाला और रहम करने वाला** (है वो अपनी रहमत से गुनाह मुआ़फ़ कर देता और रहम करता) **है(41)** (बस सब कशती पर सवार हो गये और पानी बढ़ गया) **और वो कशती उन को लेकर पहाड़ जैसी लहरों में चलने लगी, और नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने अपने** (एक सगे या सौतेले) **बेटे को** (जिस का नाम कनआ़न था और समझाने के बावजूद ईमान न लाया था इसलिए कशती में सवार न किया गया था और उस वक़्त कशती किनारे के पास ही थी और वो किनारे पर था आख़री बार) **पुकारा और वो** (कशती से) **अलग जगह पर था कि ऐ मेरे प्यारे बेटे** (ईमान लाकर जल्दी) **हमारे साथ** (कशती में) **सवार होजा और** (अक़ीदे में) **काफ़िरों के साथ मत हो** (यानी कुफ़्र छोड़ दे कि डूबने से बच जाए)**(42) वो कहने लगा कि मैं अभी किसी पहाड़ की पनाह ले लूंगा जो मुझको पानी** (में डूबने) **से बचा लेगा** (क्योंकि वो वक़्त तूफ़ान के शुरू का था पहाड़ों के ऊपर पानी न पहुंचा था)**, नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि आज अल्लाह के हुक्म से कोई बचाने वाला नहीं** (न पहाड़ और न कोई और चीज़) **लेकिन जिस पर वो ही रहम करे** (तो उस को ख़ुद ही बचाले बस कनआ़न उस वक़्त भी ईमान न लाया और पानी ज़ोर शोर के साथ उस तरफ़ से बढ़ गया)**, और दोनो** (बाप बेटों) **के बीच में** (पानी की) **एक लहर दीवार बन गई बस वो** (भी दूसरे काफ़िरों की तरह) **डूब गया(43) और** (जब सब काफ़िर डूब चुके तो) **हुक्म हो गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी** (जो तेरे ऊपर है) **निगल ले और ऐ आसमान** (बरसने से) **रूक जा** (बस दोनों बातें हो गईं) **और पानी कम हो गया और काम पूरा हुआ और कशती जूदी** (पहाड़)

पर आ ठहरी और कह दिया गया कि काफ़िर लोग रहमत से दूर(44)।

नोटः- लिखा है यह कशती 6 महीने तक तूफ़ान के ऊपर चलती रही जब काबा शरीफ़ की जगह पहुंची तो सात बार तवाफ़ किया अल्लाह तआ़ला ने अपने घर को ऊंचा करके डूबने से बचा लिया था फिर 10 मुहर्रम यौमे आशूरा में तूफ़ान ख़त्म हो कर कशती जूदी पहाड़ पर ठहरी हज़रत नूह अलैहिस्सला ने उस दिन शुकराने के तौर पर रोज़ा रक्खा और कशती में जितने आदमी थे सब को रोज़ा रखने का हुक्म दिया कहते हैं कि कशती में सवार सब जानवरों ने भी उस दिन रोज़ा रक्खा। आशूरा का दिन मुहर्रम की 10 तारीख़ सभी पैग़म्बरों की शरीअत में ख़ास है इस्लाम के शुरू में रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ होने से पहले आशूरा का रोज़ा फ़र्ज़ था रमज़ान के फ़र्ज़ हो जाने के बाद फ़र्ज़ नहीं रहा मगर सुन्नत और बड़ा सवाब सदा के लिए है। (मज़हरी)

وَ نَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِیْ مِنْ اَهْلِیْ وَ اِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَ اَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِیْنَ ﴿۴۵﴾ قَالَ یٰنُوْحُ
اِنَّهٗ لَیْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَیْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّیْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ
مِنَ الْجٰهِلِیْنَ ﴿۴۶﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَیْسَ لِیْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَ اِلَّا تَغْفِرْ لِیْ وَ تَرْحَمْنِیْۤ اَكُنْ
مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۴۷﴾ قِیْلَ یٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَ بَرَكٰتٍ عَلَیْكَ وَ عَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَ اُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ
ثُمَّ یَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۴۸﴾ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْهَاۤ اِلَیْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَاۤ اَنْتَ وَ لَا قَوْمُكَ
مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛؕ فَاصْبِرْ ۛؕ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۴۹﴾

आयत न० 45 से 49

और (जब) **नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने** (अपने बेटे के डूबने से पहले इस उम्मीद पर कि अल्लाह तआ़ला अपनी कुदरत से ईमान की तौफ़ीक़ देदे और यह ईमान लाकर डूबने से बच जाए तो) **अपने रब को पुकारा और कहा कि या रब मेरे मेरा यह बेटा मेरे घर वालों में से है और आप का** (यह) **वादा बिल्कुल सच्चा है** (कि घर वालों में जो ईमान वाले हैं उन को बचा लूंगा) **और** (चाहे यह अभी ईमान वाला नहीं है लेकिन) **आप सारे हाकिमों से बढ़ कर हाकिम** (और बड़ी कुदरत वाले) **हैं** (अगर आप चाहें तो इस को मोमिन बनादें ताकि इस की भी मुआ़फ़ी हो जाए)(45) **अल्लाह तआ़ला ने कहा कि ऐ नूह यह आदमी** (हमारे इल्म में) **तुम्हारे** (उन) **घर वालों में नहीं** (जो ईमान लाकर बख़्शे जाएंगे यानी उस के नसीब में ईमान नहीं बल्कि) **यह** (मरते दम तक) **बुरे**

कारनामों वाला (यानी काफ़िर रहने वाला) **हैं, सो मुझ से ऐसी चीज़ मत मांगो जिस की तुम को ख़बर नहीं** (यानी उस के बारे में दुआ़ मत करो), **मैं तुम को नसीहत करता हूं कि तुम नासमझ लोगों में शामिल न हो जाओ(46) नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि मैं आप की पनाह मांगता हूं इससे कि** (आगे) **आप से वो चीज़ मांगू जिस की मुझ को ख़बर न हो, और** (पिछली मुआ़फ़ कर दीजिए क्योंकि) **अगर आप मुझे मुआ़फ़ न करेंगे और मुझ पर रहम न करेंगे तो मैं बर्बाद हो जाऊंगा(47)** (जब जूदी पहाड़ पर कशती ठहरने के कुछ दिन बाद पानी बिल्कुल उतर गया उस वक़्त नूह अलैहिस्सलाम से) **कहा गया** (यानी अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद कहा या किसी फ़रिशते से कहलाया) **कि नूह** (अब जूदी पहाड़ से ज़मीन पर) **उतरो हमारी तरफ़ से सलाम और बरकते लेकर जो तुम पर उतरेगी और उन क़ौमों पर** (यानी उन लोगों की नस्लों पर) **जो तुम्हारे साथ हैं** (इस तरह यह सलाम और बरकतें क़ियामत तक होने वाले मुसलमानों के लिए हो गईं), **और** (बाद वालों में कुछ काफ़िर भी होंगे इसलिए उन के बारे में बताया जाता है कि) **बहुत सी ऐसी क़ौमें होंगी कि हम उन को** (दुनिया में) **कुछ दिन ऐश देंगे फिर** (आख़रत में) **उन पर हमारी तरफ़ से सख़्त सज़ा होगी(48) ये ग़ैब की कुछ बातें हैं जिन को हम वही के वास्ते से आप को बता रहे हैं, ये बातें** (हमारे बताने से) **पहले न आप जानते थे और न आप की क़ौम** (जानती थी तो सिवाए वही के इन को जानने का दूसरा वास्ता नहीं बस साबित हुआ कि आप पैग़म्बर हैं और फिर भी ये आप की मुख़ालफ़त करते हैं) **तो सब्र कीजिए** (जैसा इस क़िस्से में नूह अलैहिस्सलाम के सब्र का आप को पता चला), **बेशक नेक अन्जाम परहेज़गारों के लिए है(49)।**

नोटः- यहां मालूम हुआ कि किसी के वास्ते दुआ़ करने के लिए हक़ नाहक़ देख लेना ज़रूरी है।

وَ اِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ۝۵۰ یٰقَوْمِ
لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَى الَّذِیْ فَطَرَنِیْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝۵۱ وَ یٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ
تُوْبُوْۤا اِلَیْهِ یُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَیْكُمْ مِّدْرَارًا وَّ یَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَ لَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِیْنَ ۝۵۲ قَالُوْا یٰهُوْدُ مَا
جِئْتَنَا بِبَیِّنَةٍ وَّ مَا نَحْنُ بِتَارِكِیْۤ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَ مَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِیْنَ ۝۵۳ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ
اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ قَالَ اِنِّیْۤ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَ اشْهَدُوْۤا اَنِّیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝۵۴ۙ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِیْدُوْنِیْ جَمِیْعًا ثُمَّ لَا
تُنْظِرُوْنِ ۝۵۵ اِنِّیْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّیْ وَ رَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِیَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّیْ عَلٰى صِرَاطٍ

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۶﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖۤ اِلَيْكُمْ ؕ وَ يَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ
شَيْـًٔا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿۵۷﴾ وَ لَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَ
نَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿۵۸﴾ وَ تِلْكَ عَادٌ ۟ۙ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَ عَصَوْا رُسُلَهٗ وَ اتَّبَعُوْۤا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ
عَنِيْدٍ ﴿۵۹﴾ وَ اُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ
هُوْدٍ ﴿۶۰﴾ ع

आयत न० 50 से 60

और हमने आद (क़ौम) **की तरफ़ उन के** (बिरादरी या वतन के) **भाई** (हज़रत) **हूद** (अ़लैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा, उन्होंने** (अपनी क़ौम से) **कहा ऐ मेरी क़ौम तुम** (सिर्फ़) **अल्लाह की इबादत करो उस के सिवा कोई तुम्हारा माबूद** (होने के क़ाबिल) **नही, तुम** (इस बुत परस्ती के ऐतक़ाद में) **सिर्फ़ झूटी बात बनाने वाले हो** (क्योंकि इस का झूट होना दलील से साबित है)(50) **ऐ मेरी क़ौम** (मेरी पैग़म्बरी इस दलील से साबित है कि) **मैं तुम से** (तबलीग़ पर) **कुछ बदला नहीं मांगता, मेरा बदला तो सिर्फ़ उस** (अल्लाह) **के ज़िम्मे है जिस ने मुझ को पैदा किया, फिर क्या तुम** (इस बात को) **नहीं समझते** (कि पैग़म्बरी की दलील मौजूद है फिर इसमें शक की क्या वजह)(51) **और ऐ मेरी क़ौम तुम अपने गुनाह** (जैसे कुफ़्र व शिर्क) **अपने रब से मुआ़फ़ कराओ** (यानी ईमान लाओ और) **फिर** (ईमान लाकर) **उस की तरफ़** (इबादत से) **ध्यान लगाओ** (यानी नेक काम करो बस ईमान व नेक कामों की बरकत से) **वो तुम पर ख़ूब बारिश बरसाएगा और तुम को ताक़त देकर तुम्हारी** (मौजूदा) **ताक़त में तरक़्क़ी कर देगा** (बस ईमान ले आओ) **और मुजरिम रह कर** (ईमान से) **मुंह मत मोड़ो**(52) **उन लोगों ने जवाब दिया कि हूद आप हमारे सामने** (अपने अल्लाह का पैग़म्बर होने की) **कोई निशानी नहीं लाए** (यह बयान उन का हटधर्मी से था) **और हम आप के** (सिर्फ़) **कहने से तो अपने ख़ुदाओं** (की इबादत) **को छोड़ने वाले हैं नहीं और हम किसी तरह आप का यक़ीन करने वाले नहीं**(53) (और) **हमारा कहना तो यह है कि हमारे ख़ुदाओं में से किसी ने आप को असर में ले लिया है** (यानी आपने उन के बारे में बेअदबी की बातें की हैं उन्होंने बावला कर दिया है इसलिए ऐसी बहकी बहकी बातें करते हो कि अल्लाह एक है मैं पैग़म्बर हूं), **हूद** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि** (तुम जो कहते हो कि किसी बुत ने मुझ को बावला कर दिया है तो) **मैं** (खुल्लम खुल्ला) **अल्लाह को गवाह करता हूं और तुम भी**

(सुन लो और) **गवाह रहो कि मैं उन चीज़ों से नफ़रत करता हूं जिन को तुम अल्लाह के सिवा** (इबादत में) **शरीक ठहराते हो(54) तो** (अगर इन बुतों में कुछ ताक़त है तो) **तुम** (और वो) **सब मिल कर मेरे ख़िलाफ़ चालें चल लो** (और) **फिर मुझ को ज़रा ढ़ील न दो** (और कोई कमी न छोड़ो देखूं तो सही वो मेरा क्या बिगाड़ लेंगे और यह एक बड़ा मोजिज़ा हुआ कि एक इन्सान अकेले ऐसे ज़ोर आवर लोगों के सामने दावा करे और वे उस का कुछ न बिगाड़ सकें)(55) **बेशक** (न मैं उन से डरता हूं और न तुम से डरता कि) **मैंने तो अल्लाह पर भरोसा कर लिया है जो मेरा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक है, ज़मीन पर चलने वाला कोई जानदार ऐसा नहीं जिस की चोटी उस के क़ब्ज़े में न हो** (यानी सब उस के क़ब्ज़े में हैं), **बेशक मेरा रब सीधे रास्ते पर** (चलने से मिलता) **है** (बस तुम भी इस सीधे रास्ते पर चलो ताकि कामयाब हो जाओ)(56) **फिर अगर** (इस के बाद भी) **तुम** (सीधी राह से) **फिरे रहोगे तो मैं जो हुक्म मुझ को देकर भेजा गया था वो तुम को पहुंचा चुका हूं, और** (तुम्हारे कहना न मानने की वजह से) **मेरा रब तुम्हारी जगह दूसरे लोगों को इस ज़मीन में आबाद कर देगा** (सो तुम इस कुफ़्र में अपना ही नुक़सान कर रहे हो) **और उस का तुम कुछ नुक़सान नहीं कर रहे हो,** (और अगर यह सोचो अल्लाह को क्या ख़बर तो जान लो) **मेरा रब हर-हर चीज़ की देख रेख करता** (है उस को सब ख़बर रहती) **है(57) और** (फिर भी उन लोगों ने न माना तो अज़ाब का सामान शुरू हुआ तो) **जब हमारा हुक्म** (अज़ाब के लिए) **पहुंचा** (और हवा के तूफ़ान का अज़ाब आया तो) **हमने हूद** (अलैहिस्सलाम) **को और जो उन के साथ ईमान वाले थे उन को अपनी महरबानी से** (उस अज़ाब से) **बचा लिया, और** (सच तो यह है कि) **हम ने उन को एक बहुत ही सख़्त अज़ाब से बचा लिया(58) और यह आ़द की क़ौम थी जिन्होंने अपने रब की आयतों** (यानी निशानियों और हुक्मों) **का इनकार किया और उस के पैग़म्बरों का कहना न माना और सभी ऐसे लोगों के कहने पर चलते रहे जो ज़ालिम** (और) **ज़िद्दी थे(59)** (इन कामों का यह नतीजा हुआ कि) **इस दुनिया में भी लानत उन के साथ-साथ रही** (कि तूफ़ान के अज़ाब से हलाक हुए) **और क़ियामत के दिन भी** (उन के साथ-साथ रहेगी कि सदा का अज़ाब होगा), **अच्छी तरह सुन लो आ़द क़ौम ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया, अच्छी तरह सुन लो** (इस कुफ़्र का यह अन्जाम हुआ कि दोनो जहान में) **रहमत से दूरी हुई आ़द को जो कि हूद** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम थी(60)।**

नोटः- कुरआन करीम में यह बात सभी पैग़म्बरों की ज़बानी कही गई है कि हम तुम से अपनी दावत

व महनत का कोई बदला नहीं चाहते इससे मालूम होता है कि दावत व तबलीग़ पर अगर बदला लिया जाए तो उस का असर नहीं रहता।

وَ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَ
اسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿۶۱﴾ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا
قَبْلَ هٰذَاۤ اَتَنْهٰىنَاۤ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَ اِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿۶۲﴾ قَالَ يٰقَوْمِ
اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَ اٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۫ فَمَا
تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ﴿۶۳﴾ وَ يٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ اللّٰهِ وَ لَا تَمَسُّوْهَا
بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿۶۴﴾ فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ
مَكْذُوْبٍ ﴿۶۵﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَ مِنْ خِزْيِ يَوْمِىِٕذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ
هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿۶۶﴾ وَ اَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۶۷﴾ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ
اَلَاۤ اِنَّ ثَمُوْدَاۡ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿۶۸﴾

आयत न० 61 से 68

और हम ने समूद (क़ौम) **के पास उन के भाई सालिह** (अलैहिस्सलाम) **को पैग़म्बर बनाकर भेजा, उन्होंने** (अपनी क़ौम से) **कहा ऐ मेरी क़ौम** (सिर्फ़) **अल्लाह की इबादत करो उस के सिवा कोई तुम्हारा माबूद** (होने के क़ाबिल) **नहीं,** (उस का तुम पर यह इनआ़म है कि) **उस ने तुम को ज़मीन** (की चीज़ों) **से पैदा किया और तुम को उस** (ज़मीन) **में आबाद किया** (यानी पैदा भी किया और पालता भी है तो जब वो ऐसा नेमतें देने वाला है) **तो तुम अपने गुनाह** (जैसे शिर्क व कुफ़्र) **उससे मुआफ़ कराओ** (यानी ईमान लाओ और) **फिर** (ईमान लाकर) **उस की तरफ़** (इबादत से) **लौ लगाओ** (यानी नेक काम करो), **बेशक मेरा रब** (उस आदमी से) **नज़दीक है** (जो उस की तरफ़ लौ लगाता है और उस आदमी की दुआ़) **कुबूल करने वाला** (है जो उससे गुनाह मुआफ़ कराता) **है(61) वो लोग कहने लगे ऐ सालिह तुम तो इससे पहले हम में होनहार** (लगते) **थे** (यानी हम को तुम से बड़ी उम्मीद थी कि क़ौम का नाम रौशन करोगे तुम अब ये कैसी बातें करने लगे) **क्या तुम हम को उन चीज़ों की इबादत से मना करते हो जिन की इबादत हमारे बड़े**

करते आए हैं (यानी तुम इन से मना मत करो) **और जिस दीन की तरफ़ तुम हम को बुला रहे हो** (यानी तौहीद) **सच में हम तो उस की तरफ़ से बड़े** (भारी) **शक में हैं जिस ने हम को उलझन में डाल दिया है** (कि एक ख़ुदा होने की बात हमारी समझ में नहीं आती)(62) **आप ने** (जवाब में) **कहा ऐ मेरी क़ौम** (तुम जो कहते हो कि न तौहीद की बात करो और न बुत परस्ती से रोको तो) **भला यह तो बताओ कि अगर मैं अपने रब की तरफ़ से मिली निशानी पर हूं** (जिससे तौहीद साबित है) **और उस ने मुझ को अपनी तरफ़ से रहमत** (यानी पैग़म्बरी) **दी हो** (जिससे इस तौहीद की दावत मेरी ज़िम्मेदारी है) **सो** (इस हालत में) **मैं अगर अल्लाह का कहना न मानूं** (और अपने काम को छोड़ दूं) **तो** (यह तो बताओ कि) **फिर मुझ को अल्लाह** (के अज़ाब) **से कौन बचा लेगा, तो तुम तो** (ऐसी बुरी राय देकर) **सरासर मेरा नुक़सान ही कर रहे हो**(63) **और ऐ मेरी क़ौम** (तुम जो मोजिज़ा चाहते हो तो) **यह ऊंटनी है अल्लाह की जो तुम्हारे लिए निशानी** (बन कर आई) **है** (और इसी लिए अल्लाह की ऊंटनी कहलाई) **सो इस को** (आज़ाद) **छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में** (घास चारा) **खाती फिरा करे** (इसी तरह अपनी बारी के दिन पानी पीती रहे जैसा दूसरी आयत में है) **और इस को बुराई** (और सताने के इरादे) **से हाथ भी मत लगाना कभी तुम को फ़ौरन अज़ाब आपकड़े** (यानी देर न लगे)(64) **सो उन्होंने** (समझाने के बावजूद) **उस** (ऊंटनी) **को मार दिया तो सालिह** (अ़लैहिस्सलाम) **ने कहा** (अच्छा) **तुम अपने घरों में तीन दिन और बसर कर लो** (तीन दिन के बाद अज़ाब आता है और) **ये ऐसा वादा है जिस में ज़रा झूट नहीं** (क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से है)(65) **फिर** (तीन दिन बीतने के बाद) **जब हमारा हुक्म** (अ़ज़ाब के लिए) **आ पहुंचा हम ने सालिह** (अ़लैहिस्सलाम) **को और जो इन के साथ ईमान वाले थे उन को अपनी महरबानी से** (उस अज़ाब से) **बचा लिया और उस दिन की बड़ी रूसवाई से बचा लिया, बेशक आप का रब ही ताक़त वाला ज़बरदस्त** (ज़ोर वाला) **है** (जिस को चाहे सज़ा दे जिस को चाहे बचाले)(66) **और उन ज़ालिमों को एक होलनाक आवाज़ ने आ दबाया** (कि वो जिब्रील अलैहिस्सलाम की चीख़ थी जिसमें सारी दुनिया की बिजलियों से ज़्यादा कड़क थी) **जिससे** (दिल फट गये और) **वो अपने घरों में** (ऐसे) **औंधे पड़े रह** (गये यानी हालाक हो) **गये**(67) **जैसे उन घरों में कभी बसे ही न थे, अच्छी तरह सुन लो समूद** (की क़ौम) **ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया, अच्छी तरह सुन लो** (उस कुफ़्र का यह अन्जाम हुआ कि) **बर्बादी समूद ही की हुई**(68)।

नोटः- पहले उस क़ौम पर ज़लज़ला आया फिर सख़्त आवाज़ से सब हलाक कर दिये गये। (क़ुरतबी)

وَ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ۝۶۹ فَلَمَّا
رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَ اَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ۝۷۰ؕ وَ
امْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَ مِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ۝۷۱ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَ اَنَا
عَجُوْزٌ وَّ هٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ۝۷۲ قَالُوْۤا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَ بَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ
اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝۷۳

आयत न० 69 से 73

और हमारे भेजे हुए फ़रिशते (इन्सानी शकल में) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **के पास** (बेटा होने की) **ख़ुशख़बरी ले कर आए और** (आने के वक़्त) **उन्होंने सलाम किया, इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **ने भी** (जवाब में) **सलाम किया** (और पहचाने नहीं कि ये फ़रिशते हैं आम महमान समझे) **फिर देर नहीं लगाई कि** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम महामानों के लिए) **एक तला हुआ बछड़ा** (यानी उस का गोश्त) **लाए** (और उन के सामने रख दिया ये फ़रिशते थे क्यों खाते)(69) **तो जब इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने देखा कि उस खाने तक उनके हाथ नहीं बढ़ते तो उन से घबराए और उन से दिल में डरे** (कि ये महमान तो नहीं कोई दुशमन न हों), **वो फ़रिशते कहने लगे डरो मत** (हम आदमी नहीं फ़रिशते हैं आप के पास बेटे की ख़ुशख़बरी लेकर आए हैं और) **हम क़ौमे लूत की तरफ़ भेजे गये हैं** (कि उन को कुफ़्र की सज़ा में हलाक करें)(70) **और इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **की बीवी** (हज़रत सारा कहीं) **खड़ी** (सुन रही) **थीं बस** (औलाद की ख़बर सुनकर ख़ुशी से) **हंस पड़ी** (और अचम्भे से बोलती हुई आईं कि इस उम्र में बच्चा होगा) **सो हम ने** (यानी हमारे फ़रिशतों ने) **उन को** (दोबारा) **ख़ुशख़बरी दी इसहाक़** (के पैदा होने) **की और इसहाक़ के बाद याक़ूब की** (जो कि इसहाक़ के बेटे होंगे यानी पोते की भी ख़ुशख़बरी दी)(71) **कहने लगीं कि हाय अब मैं बच्चा जनूंगी बूढ़ी होकर और ये मेरे शौहर** (बैठे) **हैं बिल्कुल बूढ़े, सचमुच यह तो अचम्भे की बात है**(72) **फ़रिशतों ने कहा कि क्या** (पैग़म्बरों के ख़ानदान में रह कर और सदा मोजिज़े देख कर) **तुम अल्लाह के कामों में अचम्भा करती हो** (और ख़ास कर) **इस ख़ानदान के लोगों पर तो अल्लाह तआ़ला की** (ख़ास) **रहमत और उस की** (बहुत सी) **बरकतें** (उतरती रहती) **हैं, बेशक वो** (अल्लाह तआ़ला) **तारीफ़ के क़ाबिल** (और) **बड़ी शान वाला है** (वो बड़े से बड़ा काम कर सकता है बस अचम्भे की जगह उस की तारीफ़ और और शुक्र करो)(73)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि मुसलमानों के लिए यह सुन्नत है कि जब आपस में मिलें तो सलाम करें आने वाले महमान को इस को शुरू करना चाहिए और दूसरों को जवाब देना चाहिए।

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَ جَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ۝٧٤ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ
مُّنِيْبٌ ۝٧٥ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَ اِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ۝٧٦ وَ
لَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِیْٓءَ بِهِمْ وَ ضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّ قَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ۝٧٧ وَ جَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ
اِلَيْهِ ۭ وَ مِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۭ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ لَا تُخْزُوْنِ
فِيْ ضَيْفِيْ ۭ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ۝٧٨ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَ اِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا
نُرِيْدُ ۝٧٩ قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ۝٨٠ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ
فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَ لَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ۭ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ۭ اِنَّ
مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۭ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ۝٨١ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً
مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ۝٨٢ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ۭ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ۝٨٣

आयत न० 74 से 83

फिर जब इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) **की वो घबराहट दूर हुई और उन को ख़ुशख़बरी मिली** (कि औलाद पैदा होगी) **तो** (इधर से बेफ़िक्र होकर लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम का ध्यान किया कि हलाक की जाएगी और) **हम से लूत** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम के बारे में** (सिफ़ारिश करते हुए) **बहस करने लगे** (कि अज़ाब टल जाए शायद उन को उम्मीद हो कि वो ईमान ले आएंगे और कहा कि वहां तो लूत अलैहिस्सलाम भी मौजूद हैं कहीं अज़ाब से उन को नुक़सान न पहुंचे)(74) **असल में इब्राहीम बड़े सहार वाले नर्म दिल** (और हर वक़्त अल्लाह से) **लौ लगाने वाले थे**(75) (हम ने उन से कहा) **ऐ इब्राहीम इस बात को जाने दो** (ये ईमान न लाएंगे इसी लिए) **तुम्हारे रब का हुक्म** (इस बारे में) **आ चुका है और उन पर ज़रूर ऐसा अज़ाब आने वाला है जो किसी तरह हटने वाला नहीं** (इसलिए इस बारे में कुछ कहना सुनना बेकार है हां लूत अलैहिस्सलाम और सब ईमान वालों को बचा लिया जाएगा)(76) **और** (इसके बाद) **जब हमारे फ़रिशते लूत** (अलैहिस्सलाम) **के पास आए तो लूत** (अलैहिस्सलाम) **उन** (के आने) **की वजह से** (इसलिए) **दुखी**

हुए (कि वो बहुत हसीन नौजवानों की शक्ल में आए थे और लूत अलैहिस्सलाम ने उन को इन्सान समझा और अपनी क़ौम की बुरी हरकत का ध्यान आया कि वो लड़कों से बुरा काम करते थे) **और** (इस वजह से उन के आने से) **बहुत परीशान हुए** (और) **कहने लगे कि आज का दिन बहुत भारी** (है इन की तो ऐसी सूरतें हैं और क़ौम की ऐसी हरकतें और मैं अकेला देखिए क्या होता) **है**(77) **और उन की क़ौम** (को जो पता चला तो) **उन के** (यानी लूत अलैहिस्सलाम के) **पास दौड़े हुए आए, और पहले से वो बुरा काम किया ही करते थे** (ये ही सोच कर अब भी आए), **लूत** (अलैहिस्सलाम बड़े घबराए और नर्मी से) **कहने लगे कि ऐ मेरी क़ौम ये मेरी** (बहू) **बेटियां** (जो तुम्हारे घरों में हैं) **मौजूद हैं वो तुम्हारे** (जी बहलाने और ज़रूरत पूरी करने के) **लिए** (अच्छी) **ख़ासी हैं इसलिए** (लड़कों पर निगाह करने के बारे में) **अल्लाह से डरो और मेरे महमानों में मुझ को रूसवा न करो** (यानी इन महमानों को कुछ कहना मुझ को रूसवा करना है), **क्या तुम में कोई भी भला आदमी नहीं है** (कि इस बात को समझे और दूसरों को समझाए)(78) **वो कहने लगे आप को पता है कि हम को आप की इन** (बहू) **बेटियों की कोई ज़रूरत नहीं** (क्योंकि औरतों से हम को दिलचस्पी नहीं) **और आप को तो पता है जो हम चाहते हैं**(79) **लूत** (अलैहिस्सलाम बहुत तंग होकर) **कहने लगे काश मेरे पास तुम्हारे मुक़ाबिले पर कोई ताक़त होती या मैं किसी मज़बूत सहारे की पनाह लेता** (यानी मेरा कोई कुनबा क़बीला यहां होता कि मेरी मदद करता)(80) **फ़रिशतों ने** (जो लूत अलैहिस्सलाम की बेचैनी देखी तो) **कहा कि ऐ लूत** (हम आदमी नहीं जो आप इतना घबराते हैं) **हम तो आप के रब के भेजे हुए** (फ़रिशते) **हैं** (तो हमारा तो क्या कर सकते हैं बल्कि) **आप तक** (भी) **उन की पहुंच नहीं होगी** (कि आप को कुछ तकलीफ़ पहुंचा सकें और हम उन पर अज़ाब नाज़िल करने आए हैं) **इसलिए आप रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर** (यहां से बाहर) **चले जाइये और तुम में से कोई पीछे मुड़ कर भी न देखे** (यानी सब जल्दी चले जाएं) **हां मगर आप की बीवी** (मुसलमान न होने की वजह से न जाएगी), **उस पर भी वो ही मुसीबत आने वाली है जो दूसरे लोगों पर आएगी,** (और हम रात के वक़्त निकल जाने को इसलिए कहते हैं कि) **उन के** (अज़ाब के) **वादे का वक़्त सुबह का वक़्त है,** (और) **क्या सुबह का वक़्त नज़दीक नहीं** (इसलिए जल्दी निकल जाइये)(81) **सो जब** (वो रातो रात दूर निकल गये तो) **हमारा हुक्म** (अज़ाब के लिए) **आपहुंचा तो हम ने उस ज़मीन** (को उलट कर उस) **का ऊपर का हिस्सा तो नीचे कर दिया** (और नीचे का हिस्सा ऊपर कर दिया) **और उस ज़मीन पर पक्की मिट्टी के पत्थर बरसाए जो लगातार गिर रहे थे**(82) **जिन पर आप के रब की तरफ़ से**

ख़ास निशान लगे हुए थे, और (मक्के वालों को चाहिए कि इस क़िस्से से सबक़ लें क्योंकि) **ये** (क़ौमे लूत की) **बस्तियां इन ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं हैं** (सदा मुल्क शाम को आते जाते उन की बर्बादी की निशानियां देखते हैं इन को अल्लाह और पैग़म्बर की मुख़ालफ़त से डरना चाहिए कि कहीं ऐसा ही अज़ाब न आजाए)(83)।

नोटः- रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में भी कुछ लोग वो काम करेंगे जो क़ौमे लूत करती थी। जब ऐसा होने लगे तो इन्तिज़ार करो कि उन पर भी वो अज़ाब आएगा जो क़ौमे लूत पर आया है। (मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

وَ اِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ وَ لَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَ
الْمِيْزَانَ اِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّ اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿٨٤﴾ وَ يٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَ الْمِيْزَانَ
بِالْقِسْطِ وَ لَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَ لَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٨٥﴾ بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۚ۬ وَ مَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَاۤ اَوْ اَنْ
نَّفْعَلَ فِيْۤ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ
رَّبِّيْ وَ رَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَ مَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَاۤ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا
اسْتَطَعْتُ ؕ وَ مَا تَوْفِيْقِيْۤ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ اِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾ وَ يٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْۤ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ
مِّثْلُ مَاۤ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَ مَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٩﴾ وَ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ
ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا
ضَعِيْفًا ۚ وَ لَوْ لَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ٘ وَ مَاۤ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْۤ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ
اتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾ وَ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ؕ
سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَ مَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَ ارْتَقِبُوْۤا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾ وَ لَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا
نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَ اَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ
جٰثِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ ۙ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾ ع

आयत न० 84 से 95

और हम ने मदयन (वालों) **की तरफ़ उन के भाई शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा, उन्होंने** (मदयन वालों से) **कहा कि ऐ मेरी क़ौम तुम** (सिर्फ़) **अल्लाह तआ़ला की इबादत करो उस के सिवा कोई तुम्हारा माबूद** (बनने के क़ाबिल) **नहीं, और तुम नाप तौल में कमी मत करो** (क्योंकि) **मैं देखता हूं कि तुम ख़ुशहाल हो** (फिर तुम को नाप तौल में कमी करने की क्या ज़रूरत पड़ी है और असलीयत में तो किसी को भी ज़रूरत नहीं होती) **और मुझे तुम पर एक ऐसे दिन के अज़ाब का ख़तरा है जो तुम्हें चारों तरफ़ से घेर लेगा(84) और ऐ मेरी क़ौम तुम नाप और तौल पूरी तरह किया करो और लोगों का उन चीज़ों में नुक़सान मत किया करो** (जैसा तुम्हारी आ़दत है) **और** (शिर्क और लोगों के हक़ों में कमी करके) **ज़मीन में फ़साद करते हुए** (इन्साफ़ व तौहीद की) **हद से मत निकलो(85)** (लोगों के हक़ अदा करने के बाद) **अल्लाह का दिया हुआ जो कुछ** (हलाल माल) **बच जाए वो तुम्हारे लिए** (इस हराम कमाई से) **बहुत बेहतर है** (क्योंकि हराम में चाहे वो ज़्यादा हो बरकत नहीं और अन्जाम उस का जहन्नम है और हलाल चाहे कम ही हो उस में बरकत है और अन्जाम उस का जन्नत है) **अगर तुम को यक़ीन आए** (तो मान लो), **और** (अगर यक़ीन न आए तो तुम जानो) **मैं तुम पर पहरेदार तो हूं नहीं** (कि तुम से ज़बरदस्ती यह काम छुड़ा दूं जैसा करोगे भुगतोगे)(86) **वो लोग** (ये नसीहत सुन कर) **कहने लगे ऐ शुऐब क्या तुम्हारी नमाज़ तुम को** (ऐसी-ऐसी बातें) **सिखाती है कि** (तुम हम से कहते हो कि) **हम उन चीज़ों** (की इबादत) **को छोड़ दें जिन की इबादत हमारे बड़े करते आए हैं और अपने माल व दौलत के बारे में जो कुछ हम चाहें वो भी न करें, बेशक आप बड़े समझदार दीन पर चलने वाले हैं** (यानी उन का मज़ाक़ उड़ाया)(87) **शुऐब** (अ़लैहिस्सलाम) **ने कहा ऐ मेरी क़ौम** (तुम मुझ से चाहते हो कि मैं तौहीद व इन्साफ़ की नसीहत न करूं तो) **भला यह तो बताओ कि अगर मैं अपने रब की तरफ़ से निशानी लाया हूं और उस ने मुझ को अपनी तरफ़ से एक अच्छी दौलत** (यानी पैग़म्बरी) **दी हो** (जिससे मुझ पर उन हुक्मों का पहुंचाना वाजिब हो तो फिर कैसे न पहुंचाऊ) **और मैं** (जिस तरह इन बातों को सिखाता हूं ख़ुद भी उन पर चलता हूं) **यह नहीं चाहता हूं कि उन कामों को करूं जिन से तुम को मना करता हूं, मैं तो सुधार चाहता हूं जहां तक मुझ से हो सके, और मुझ से जो कुछ बन आता है सब अल्लाह ही की मदद से है** (वर्ना मैं क्या और मेरा इरादा क्या), **उसी पर मैं भरोसा रखता हूं उसी की तरफ़** (सारी बातों में) **ध्यान लगाता हूं(88) ऐ मेरी क़ौम मेरे साथ ज़िद्द** (और दुशमनी) **कहीं तुम्हें उस**

अन्जाम को न पहुंचा दे कि तुम पर भी उसी तरह की मुसीबतें आ जाएं जैसे नूह (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम या हूद** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम या सालिह** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम पर आई थी, और लूत** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम तो** (अभी) **तुम से** (बहुत) **दूर** (ज़माने में) **नहीं हुई** (यानी उन क़ौमों के मुक़ाबिले इस का ज़माना नज़दीक है)**(89) और तुम अपने रब से अपने गुनाह** (यानी शिर्क व ज़ुल्म) **मुआफ़ कराओ** (यानी ईमान लाओ क्योंकि ईमान से सब गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं चाहे हक अदा करने पड़ें) **फिर** (इबादत के साथ) **उस की तरफ़ लौ लगाओ, बेशक मेरा रब बड़ा महरबान बड़ी मुहब्बत करने वाला** (है वो गुनाह मुआफ़ कर देता है इबादतों को क़ुबूल करता) **है (90) वो लोग** (लाजवाब होकर) **कहने लगे कि शुऐब बहुत सी बातें तुम्हारी कही हुई हमारी समझ में नहीं आतीं और हम तुम को अपने** (बीच) **में कमज़ोर देखते हैं और अगर तुम्हारे ख़ानदान का** (अपने दीन पर होने) **का ध्यान न होता तो हम तुम को** (कभी का) **पत्थर मार-मार कर हलाक कर चुके होते, और हमारी नज़र में तुम्हारी कुछ हैसियत ही नहीं(91) शुऐब** (अ़लैहिस्सलाम) **ने** (जवाब में) **कहा ऐ मेरी क़ौम क्या मेरा ख़ानदान तुम्हारे नज़दीक** (नऊ़ज़ुबिल्लाह) **अल्लाह से भी ज़्यादा इ़ज़्ज़तदार है** (कि ख़ानदान का तो लिहाज़ किया)**, और उस को** (यानी अल्लह तआ़ला को) **तुम ने पीठ पीछे डाल दिया** (यानी उससे डरते नहीं तो इस का अन्जाम जल्दी ही भुगतोगे, क्योंकि) **बेशक मेरा रब तुम्हारे सब कारनामों को अपने** (इल्म के) **घेरे में लिए हुए है(92) और ऐ मेरे क़ौम** (अगर तुम को अज़ाब का भी यक़ीन नहीं आता तो) **तुम अपने काम करते रहो मैं भी अपना काम कर रहा हूं,** (सो) **अब जल्दी तुम्हें पता चल जाएगा कि किस पर ऐसा अज़ाब आएगा जो उस को रूसवा कर देगा और वो कौन आदमी है जो झूटा था, और तुम भी इन्तिज़ार करो मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूं** (कि देखें अज़ाब कब आता है)**(93) और जब हमारा हुक्म** (अज़ाब के लिए) **आ पहुंचा** (तो) **हमने** (उस अज़ाब से) **शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **को और जो उन के साथी ईमान वाले थे उन को अपनी** (ख़ास) **महरबानी से बचा लिया और उन ज़ालिमों को आदबाया एक सख़्त आवाज़ ने** (कि जिब्रील अलैहिस्सलाम की चीख़ थी) **सो अपने घरों के अन्दर औंधे गिरे रह** (गये और मर) **गये(94) जैसे कभी उन घरों में बसे ही न थे, अच्छी तरह सुन लो** (और सबक़ लो) **मदयन की भी वैसी ही बर्बादी हुई जैसी बर्बादी समूद की हुई थी(95)।**

नोटः- यहां मालूम हुआ कि नाप तौल में कमी करना बड़े गुनाहों में से है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٩٦﴾ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۖ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ
بِرَشِيدٍ ﴿٩٧﴾ يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۖ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ ﴿٩٨﴾ وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ لَعْنَةً وَ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ ﴿٩٩﴾ ذَٰلِكَ مِنْ أَنبَاءِ الْقُرَىٰ نَقُصُّهُ عَلَيْكَ مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ﴿١٠٠﴾ وَمَا
ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مِن شَيْءٍ لَّمَّا جَاءَ
أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ﴿١٠١﴾

आयत न० 96 से 101

और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) **को** (भी) **अपने मोजिज़े और खुले सबूत देकर पैग़म्बर बनाकर भेजा(96) फ़िरऔन और उस के सरदारों के पास सो** (न फ़िरऔन ने माना और न उस के सरदारों ने माना बल्कि फ़िरऔन भी अपने कुफ़्र पर रहा और) **वो लोग** (भी) **फ़िरऔन** (ही) **की राय पर चलते रहे और फ़िरऔन की राय कुछ सही न थी(97) वो** (फ़िरऔन) **क़ियामत के दिन अपनी क़ौम से आगे-आगे होगा फिर उन** (सब) **को दोज़ख़ में ले जाएगा, और वो** (दोज़ख़) **बहुत ही बुरी जगह है जिसमें ये लोग उतारे जाएंगे(98) और इस दुनिया में भी लानत उनके साथ साथ रही और क़ियामत के दिन भी** (उन के साथ रहेगी जैसे यहां दरिया में डूबे और वहां दोज़ख़ नसीब होगी)**, बुरा इनआम है जो उन को दिया गया(99) ये** (जो कुछ ऊपर क़िस्सों में बयान हुआ) **उन** (बर्बाद) **बस्तियों का कुछ हाल था जिन को हम आप से बयान करते हैं** (सो) **कुछ बस्तियां तो उन में** (अब भी) **मौजूद हैं और कुछ का बिल्कुल निशान मिट गया(100) और** (हम ने जो उन बस्ती वालों को सज़ाएं दीं तो) **हम ने उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया** (कि बिना कुसूर सज़ा दी हो जो कि देखने में ज़ुल्म है) **लेकिन उन्होंने ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म किया** (कि ऐसी हरकतें कीं कि सज़ा के हक़दार हुए) **सो उन के वो माबूद जिन की वो अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते थे उन के कुछ काम न आए जब आप के रब का हुक्म** (अज़ाब के लिए) **आ पहुंचा** (कि उन को अज़ाब से बचा लेते)**, और** (काम तो क्या आते बल्कि) **उल्टा उन को नुक़सान पहुंचाया** (यानी नुक़सान की वजह बने कि उन की इबादत की वजह से सज़ा पाई)(101)।

وَ كَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَ هِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ۝١٠٢ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ
عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ۝١٠٣ وَ مَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ؕ ۝١٠٤
يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِىٌّ وَّ سَعِيْدٌ ۝١٠٥ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّ
شَهِيْقٌ ۙ ۝١٠٦ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝١٠٧ وَ اَمَّا
الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ
مَجْذُوْذٍ ۝١٠٨ فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰۤؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَ اِنَّا
لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ۝١٠٩ ع وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ
رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ لَفِىْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝١١٠ وَ اِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا
يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١١١

आयत न० 102 से 111

और आप के रब की पकड़ ऐसी ही (सख़्त) **है जब वो किसी बस्ती वालों की पकड़ करता है जब कि वो ज़ुल्म** (व कुफ़्र) **किया करते हों, बेशक उस की पकड़ बड़ी दर्दनाक** (और) **सख़्त** (है कि उससे सख़्त तकलीफ़ पहुंचती है और उससे कोई बच नहीं सकता) **है(102) इन क़िस्सों में उस आदमी के लिए बड़ा सबक़ है जो आख़रत के अज़ाब से डरता हो** (कि जब दुनिया का अज़ाब ऐसा सख़्त है तो आख़रत का अज़ाब कैसा सख़्त होगा), **वो** (यानी आख़रत का दिन) **ऐसा दिन होगा कि उसमें सभी आदमी जमा किये जाएंगे और वो सब की हाज़िरी का दिन है(103)** (उस के आने में कोई शक न करे आएगा ज़रूर) **हम उस को सिर्फ़ थोड़ी मुद्दत के लिए** (ख़ास वजह से) **रोके हुए हैं(104)** (फिर) **जिस वक़्त वो दिन आएगा** (तो डर की वजह से लोगों का यह हाल होगा कि) **कोई आदमी अल्लाह की इजाज़त के बिना बात तक** (भी) **न कर सकेगा फिर उनमें कुछ बदनसीब** (यानी काफ़िर) **होंगे और कुछ ख़ुशनसीब** (यानी मोमिन) **होंगे(105) सो जो लोग बदनसीब होंगे वो तो दोज़ख़ में होंगे जहां उन की चीख़ने चिल्लाने की आवाज़ें आएंगी(106)** (और ये) **उसमें सदा-सदा रहेंगे जब तक आसमान व ज़मीन मौजूद हैं** (यह मुहावरा है यानी सदा के लिए और कोई निकलने की सूरत न होगी) **हां मगर अल्लाह ही** (निकालना) **चाहे तो दूसरी बात है,** (क्योंकि) **बेशक आप का रब जो चाहे उस को पूरी तरह कर सकता है** (मगर अल्लाह

तआला भी यह बात न चाहेगा इसलिए निकलना नसीब न होगा)(107) **और जो लोग ख़ुशनसीब हैं सो वो जन्नत में होंगे** (और) **वो उस में** (दाख़िल होने के बाद) **सदा-सदा को रहेंगे जब तक आसमान व ज़मीन मौजूद हैं** (चाहे जाने से पहले कुछ सज़ा भुगती हो) **हां आप का रब ही कुछ और चाहे** (तो दूसरी बात है), **यह भी ख़त्म न होने वाला इनआम होगा(108) सो जिस चीज़ की ये** (मुशरिक लोग) **इबादत करते हैं उस के बारे में ज़रा भी शक न करना** (बल्कि यक़ीन रखना कि इस पर उन को सज़ा मिलेगी), **ये लोग भी उसी तरह** (अल्लाह के सिवा दूसरों की) **इबादत कर रहे हैं जिस तरह इन से पहले इन के बाप दादा इबादत करते थे, और हम बेशक** (क़ियामत को) **उन का हिस्सा** (अज़ाब का) **पूरा-पूरा पहुंचा देंगे जिसमें कमी न की जाएगी(109) और हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को किताब** (यानी तौरेत) **दी थी तो उस की** (भी क़ुरआन की तरह) **मुख़ालफ़त की गई** (कि किसी ने माना किसी ने नहीं माना यह कोई आप के लिए नई बात नहीं हुई बस आप ग़म न करें), **और** (ये इनकार करने वाले अज़ाब के ऐसे हक़दार हैं कि) **अगर एक बात आप के रब की तरफ़ से पहले ही तय न हो चुकी होती** (कि पूरा अज़ाब उन को आख़रत में दूंगा) **तो उन का फ़ैसला** (दुनिया ही में) **हो चुका होता** (यानी वो अज़ाब आजाता), **और ये लोग** (अभी तक) **इस** (फ़ैसले यानी अज़ाब) **की तरफ़ से ऐसे शक में** (पड़े) **हैं जिस ने उन को उलझन में डाल रक्खा** (है कि उन को अज़ाब का यक़ीन ही नहीं आता, शक का मतलब ये ही) **है(110) और** (किसी के शक व इनकार से यह अज़ाब टलेगा नहीं बल्कि) **बेशक सब के सब ऐसे ही हैं कि आप का रब उन को उन के कामों** (के बदले) **का पूरा-पूरा हिस्सा देगा, बेशक वो उन के सब कामों की पूरी ख़बर रखता** (है जब उन की सज़ा के मुआमले का आप से कुछ वास्ता नहीं तो आप और मुसलमान अपने काम में लगे रहें उन कामों का बयान आगे आयतों में आता) **है(111)।**

فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْاؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۲﴾ وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۳﴾

आयत न० 112 से 113

सो (ऐ पैग़म्बर) **जिस तरह कि आप को हुक्म हुआ है** (दीन के रास्ते पर) **सीधे चलते रहिए और वो लोग भी** (पाबन्द रहें) **जो कुफ़्र से तौबा करके आप के साथ हैं और** (दीन की)

हद से आगे न निकलो, बेशक वो तुम सब के कामों को अच्छी तरह देखता है(112) **और** (ऐ मुसलमानों इन) **ज़ालिमों की तरफ़ मत झुको** (और उन का तरीक़ा मत अपनाओ) **कभी तुम को दोज़ख़ की आग लग जाए और** (उस वक़्त) **अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त** (और हिमायती) **न हो फिर तुम्हारी कोई मदद भी न करे** (क्योंकि दोस्ती तो मदद से आसान है जब दोस्ती करने वाला भी कोई नहीं तो मदद करने वाला कौन होता)(113)।

नोटः- यहां मालूम हुआ कि काफ़िरों, ज़ालिमों, गुनाहगारों और बिदअ़ती लोगों से मेल जोल रखने से परहेज़ रखना चाहिए सिवाए इसके कि किसी मजबूरी से उन से मिलना पड़े।

وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ ۚ وَ
اصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ فَلَوْ لَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ
الْفَسَادِ فِى الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَاۤ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۶﴾ وَ
مَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَ لَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ لَا
يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ ۙ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَ لِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَ تَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ
الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَ كُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَ جَآءَكَ فِىْ هٰذِهِ
الْحَقُّ وَ مَوْعِظَةٌ وَّ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ وَ قُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ ۙ وَ
انْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَ لِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَ تَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَ
مَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ ۧ

आयत न० 114 से 123

और (ऐ पैग़म्बर) **आप नमाज़ की पाबन्दी रखिए दिन के दोनों सिरों पर** (यानी शुरू और आख़िर में) **और रात के कुछ हिस्सों में, बेशक नेक काम** (आमाल नामो से) **मिटा देते हैं बुरे कामों को, यह बात** (कि नेकियों से गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं) **एक नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए** (तो हर नेकी से दिलचस्पी होनी चाहिए)(114) **और** (इन इनकार करने वालों की तरफ़ से जो तकलीफ़ें पहुंचे उन पर) **सब्र किया कीजिए कि अल्लाह तआ़ला नेकी करने वालों का**

बदला बर्बाद नहीं करते (सब्र भी बड़े दर्जे की नेकी है उस का पूरा बदला मिलेगा)(115) **सो** (आप से पहली उम्मतों पर जो अज़ाब आए उस की वजह यह हुई कि) **जो उम्मतें तुम से पहले हुई हैं उनमें ऐसे समझदार लोग न हुए जो कि** (दूसरों को) **मुल्क में फ़साद** (यानी कुफ़्र व शिर्क) **फैलाने से मना करते सिवाए कुछ आदमियों के कि जिन को उन में से हम ने** (अज़ाब से) **बचा लिया था** (कि उन्होंने जैसे ख़ुद कुफ़्र व शिर्क से तौबा कर ली थी दूसरों को भी मना करते रहते थे), **और जो लोग ज़ालिम थे वो जिस ऐश में थे उसी के पीछे पड़े रहे और जुर्म करने के आदी हो गये** (कि उससे बाज़ ही न आए)(116) **और** (इस से साबित हो गया कि) **आप का रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को कुफ़्र की वजह से हलाक कर दे और उन के रहने वाले** (अपने और दूसरों के) **सुधार में लगे हों** (बल्कि जब सुधार की जगह फ़साद करें और फ़साद करने वालों को मना न करें उस वक़्त अज़ाब के हक़दार हो जाते हैं)(117) **और अगर अल्लाह चाहता तो सब आदमियों को एक ही तरीक़े का बना देता** (यानी सब को मोमिन इसमें कुछ भेद हैं इसलिए ऐसा नहीं चाहा इसलिए लोग दीन के ख़िलाफ़ अलग-अलग तरीक़ों पर हो गये) **और** (आगे भी) **सदा अलग-अलग रास्तों पर ही रहेंगे**(118) **मगर जिस पर आप के रब की रहमत हो** (वो दीन के ख़िलाफ़ रास्ता न अपनाएगा), **और** (उन के अलग राह पर होने पर ग़म न कीजिए क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों को इसी वास्ते पैदा किया है** (कि वो अलग राह पर रहें), **और** (इस की वजह यह है कि) **आप के रब की यह बात पूरी होगी कि मैं जहन्नम को जिन्नात से और इन्सानों से दोनों से भर दूंगा** (जिससे पता चल जाए कि अल्लाह तआ़ला रहम करने वाले भी हैं और सज़ा देने वाले भी)(119) **और पैग़म्बरों के क़िस्सों में से हम ये सारे** (बताए) **क़िस्से आप से बयान करते हैं जिन से हम आप के दिल को हिम्मत** (और तसल्ली) **देते हैं, और इन क़िस्सों में आप के पास ऐसी बात पहुंची है जो ख़ुद भी हक़ है और मुसलमानों के लिए** (बुरे कामों से रोकने के लिए) **नसीहत है और** (अच्छे काम करने के लिए) **याद दिलाने वाली है**(120) **और जो लोग** (इन दलीलों के बावजूद भी) **ईमान नहीं लाते उन से कह दीजिए कि** (मैं तुम से नहीं उलझता) **तुम अपने तरीक़े पर काम करते रहो, हम भी** (अपने तरीक़े पर) **काम कर रहे हैं**(121) **और** (इन कामों के नतीजों का) **तुम** (भी) **इन्तिज़ार करो, हम भी इन्तिज़ार करते हैं** (सो जल्दी झूट खुल जाएगा)(122) **आसमानों और ज़मीन में जितनी छुपी बातें हैं उन का इल्म अल्लाह ही को है और सारे फ़ैसले उसी की तरफ़ लौटाए जाएंगे तो** (ऐ पैग़म्बर) **आप उसी की इबादत कीजिए** (जिसमें तबलीग़ भी दाख़िल है) **और उसी पर भरोसा रखिए, और आप का रब उन बातों से**

अन्जान नहीं जो कुछ तुम लोग कर रहे हो(123)।

नोटः- यहां एक बात यह भी मालूम हुई कि क़ौम में सुधार की कोशिश करने वालों की वजह से अज़ाब रूका रहता है और अगर गुनाहों के बढ़ जाने की वजह से अज़ाब आता भी है तो सुधार की कोशिश करने वालों को बचा लिया जाता है।

दूसरी बात यह भी मालूम हुई कि अगर अल्लाह तआ़ला चाहते तो सभी लोगों को इस्लाम क़ुबूल करने पर मजबूर कर देते मगर इस दुनिया में अल्लाह तआ़ला ने किसी को दीन के बारे में मजबूर नहीं किया बल्कि इन्सान को इस बारे में आज़ादी दी है। सही और ग़लत तरीक़े का फ़ैसला आख़रत में हो जाएगा। पैग़म्बरों का काम तो सही रास्ता बता देना है।

12-सूरत यूसुफ़

इस मक्की सूरत में '12' रूकू और '111' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓرٰ ۟ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝١ اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٢ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ
الْقَصَصِ بِمَاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖۗ وَ اِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝٣ اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ
يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝٤ قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ
رُءْيَاكَ عَلٰۤى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٥ وَ كَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَ
يُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَ عَلٰۤى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَاۤ اَتَمَّهَا عَلٰۤى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ
اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٦ ع

आयत न० 01 से 06

अलिफ़ लाम रा (इस का मतलब तो अल्लाह ही को पता है) **ये आयतें हैं एक साफ़ किताब की** (यानी इन का मतलब साफ़ है)**(01) हम ने उतारा है इस कुरआन को अरबी** (ज़बान का) **बना कर ताकि तुम** (अरबी जानने वाले दूसरों से पहले) **समझो** (फिर तुम्हारे वास्ते से दूसरे लोग समझें)**(02) हम ने** (ऐ पैग़म्बर) **जो यह कुरआन आप के पास भेजा है इस के वास्ते से हम आप से एक बड़ा अच्छा क़िस्सा बयान करते हैं** (क्योंकि न आपने कोई किताब पढ़ी थी न किसी से कुछ सीखा था) **और** (न इस क़िस्से की ऐसी शोहरत थी कि लोग जानते हों इसलिए) **इससे पहले आप** (इस क़िस्से से) **बिल्कुल बेख़बर थे(03)** (यह उस वक़्त की बात है) **जब कि यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम) **ने अपने बाप** (याकूब अलैहिस्सलाम) **से कहा कि अब्बा जान मैंने** (ख़्वाब में) **ग्यारह सितारे और सूरज और चान्द देखे हैं उन को अपने सामने सजदा करते हुए देखा है(04) उन्होंने** (जवाब में) **कहा कि बेटा अपने इस ख़्वाब को अपने भाइयों के सामने न बताना** (क्योंकि वो पैग़म्बर के ख़ानदान में से होने की वजह से इस ख़्वाब का मतलब जानते हैं ग्यारह सितारे

गयारह भाई और सूरज बाप और चान्द मां है और सजदा करने से मतलब उन सब का तुम्हारा ताबेदार होना है) **तो वो तुम्हारे** (सताने के) **लिए कोई साज़िश करेंगे** (यानी भाइयों में से अक्सर क्योंकि दस बड़े भाई तो सौतेले थे उन से ख़तरा था सिर्फ़ एक भाई सगे थे जिन से ख़तरा तो न था मगर हो सकता था उन के मुंह से बात निकल जाए और दूसरों को पता चल जाए), **बेशक शैतान इन्सान का खुला दुशमन है** (इसलिए भाइयों को बहकाएगा)(05) **और** (जिस तरह अल्लाह तआला तुम को यह इ़ज़्ज़त देगा कि सब तुम्हारे ताबेदार होंगे) **इसी तरह तुम्हारा रब तुम को** (दूसरी इ़ज़्ज़त पैग़म्बरी के लिए भी) **चुनेगा और तुम को ख़्वाबों की ताबीर का इल्म देगा** (यानी ख़्वाबों का मतलब बयान करना सिखाएगा) **और** (दूसरी नेमतें देकर भी) **तुम पर और याकूब की औलाद पर** (उसी तरह) **अपनी नेमतें पूरी करेगा जैसा कि इससे पहले तुम्हारे दादा इब्राहीम व इसहाक़** (अलैहिमुस्सलाम) **पर अपनी नेमतें पूरी कर चुका है, बेशक तुम्हारा रब बड़ा इल्म वाला बड़ी हिकमत वाला है**(06)।

नोटः- यहूदियों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसललम को आज़माने के लिए यह सवाल किया था कि अगर आप अल्लाह के सच्चे नबी हैं तो यह बताइये कि वो कौन सा पैग़म्बर है जिस का एक बेटा मुल्क शाम से मिस्र ले जाया गया और बाप उस के ग़म में रोते-रोते नाबीना हो गये थे। मक्के में इस क़िस्से को कोई नहीं जानता था और न इस की शोहरत थी। न वहां किताब वालों में से कोई आ़लिम था कि उससे सुन लेते। इस सवाल पर यह सूरत उतारी गई।

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَ اِخْوَتِهٖۤ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝٧ اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَ اَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰۤى اَبِيْنَا مِنَّا وَ نَحْنُ
عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۝٨ اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَ تَكُوْنُوْا مِنْۢ
بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝٩ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَ اَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ
السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝١٠ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَ اِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ۝١١ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا
يَّرْتَعْ وَ يَلْعَبْ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝١٢ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْۤ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَ اَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَ اَنْتُمْ عَنْهُ
غٰفِلُوْنَ ۝١٣ قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَ نَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّاۤ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝١٤ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَ اَجْمَعُوْۤا اَنْ
يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١٥ وَ جَآءُوْۤ اَبَاهُمْ عِشَآءً

يَبْكُوْنَ ۝١٦ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَ تَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَ مَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا
وَ لَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ۝١٧ وَ جَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ
وَ اللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ۝١٨ وَ جَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَ
اَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۝١٩ وَ شَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَ كَانُوْا فِيْهِ مِنَ
الزّٰهِدِيْنَ ۝٢٠ ع

आयत न० 07 से 20

यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) **के और उन के** (सौतेले) **भाइयों के क़िस्से में** (अल्लाह की क़ुदरत और आप की पैग़म्बरी की) **बड़ी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो** (आप से उन का क़िस्सा) **पूछते हैं** (क्योंकि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ऐसी बेबसी की हालत से हुकूमत तक पहुंचा देना यह अल्लाह ही का काम था जिससे मुसलमानों को सबक़ और ईमान में तरक़्क़ी और यहूदी जिन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आज़माने के लिए यह क़िस्सा पूछा था उन के लिए पैग़म्बरी की दलील है)(07) **जब** (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सौतेले) **भाइयों ने** (आपस में) **कहा कि** (यह क्या बात है कि) **यूसुफ़ और उन का** (सगा) **भाई** (बिनयामीन) **हमारे बाप को ज़्यादा प्यारे हैं जब कि** (वो दोनों कम उम्र होने की वजह से उन की ख़िदमत के क़ाबिल भी नहीं और) **हम एक गिरोह का गिरोह** (हैं और उन की तरह तरह की ख़िदमत भी करते) **हैं, सचमुच हमारे बाप** (इस बारे में) **खुली ग़लती में हैं**(08) (इसलिए ज़्यादा प्यारे यूसुफ़ को किसी तरह उन के पास से हटाना चाहिए जिस की सूरत यह है कि) **यूसुफ़ को क़त्ल कर दो या उस को किसी** (दूर जगह) **ज़मीन में फेंक आओ** (जहां से वापस न आसके) **तो** (फिर) **तुम्हारे बाप का ध्यान सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ हो जाएगा और तुम्हारे सब काम बन जाएंगे(09) उन्हीं में से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ़ को क़त्ल न करो** (कि बड़ा जुर्म है) **और उन को किसी वीरान कुंए में डाल दो** (जिसमें इतना पानी न हो जिसमें डूबने का ख़तरा हो क्योंकि वो तो क़त्ल ही की एक सूरत है और बस्ती और रास्ते से बहुत दूर भी न हो) **ताकि कोई राह चलता मुसाफ़िर निकाल ले जाए अगर तुम को** (यह काम) **करना ही है** (तो इस तरह करो इस पर सब की राय एक हो गई)(10) **सब ने** (मिल कर बाप से) **कहा कि अब्बा जान इस की क्या वजह है कि यूसुफ़ के बारे में आप हमारा भरोसा नहीं करते** (कि कभी कहीं हमारे साथ नहीं भेजते) **जब कि हम उस के** (दिलो जान से) **हमदर्द हैं**(11) **आप उस**

को कल हमारे साथ (जंगल) **भेज दीजिए कि वो खाए पिये खेले कूदे और हम उस की पूरी देखभाल रखेंगे**(12) **याकूब** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि** (मैं उन का भेजना दो वजह से पसन्द नहीं करता एक तो) **मुझ को इस बात का ग़म होगा कि तुम उस को** (मेरी नज़रों के सामने से) **ले जाओ और** (दूसरे) **यह ख़तरा भी है कि इस को भेड़िया खा जाए और तुम** (अपने धन्धों में) **इससे बेख़बर रहो** (क्योंकि उस जंगल में भेड़िये बहुत थे)(13) **वो बोले अगर इस को भेड़िया खाले और हम एक गिरोह का गिरोह** (मौजूद) **हों तो हमारा होना ही बेकार है**(14) **फिर** (बाप से कह सुन कर ये उन को ले चले तो) **जब उन को** (अपने साथ जंगल) **ले गये और** (पहली राय के हिसाब से) **सब ने पक्का इरादा कर लिया कि उन को किसी वीरान कुंए में डाल दें** (जैसा कि डाल भी दिया) **और** (उस वक़्त यूसुफ़ की तसल्ली के लिए) **हम ने उन के पास वही भेजी कि** (तुम ग़म न करो हम तुम को यहां से निकाल कर बड़े रूतबे पर पहुंचा देंगे और एक दिन वो होगा कि) **तुम उन लोगों को यह बात जितलाओगे और वो तुम को** (शाही सूरत में देख कर) **पहचानेंगे भी नहीं** (बस इसी तरह हुआ)(15) **और** (उधर) **वो लोग अपने बाप के पास रात को रोते हुए पहुंचे**(16) (और जब बाप ने रोने की वजह पूछी तो) **कहने लगे हम सब तो आपस में दौड़ लगाने में लग गये** (कि कौन आगे निकले) **और यूसुफ़ को हमने** (ऐसी जगह जहां भेड़िया आने की उम्मीद न थी) **अपने सामान के पास छोड़ दिया बस** (इतने में) **एक भेड़िया** (आया और) **उन को खा गया और आप तो हमारा क्यों यक़ीन करने लगे चाहे हम कैसे ही सच्चे हों**(17) **और** (जब याकूब अलैहिस्सलाम के पास आने लगे थे तो) **यूसुफ़ के कुर्ते पर झूटमूट का ख़ून भी लगा लाए** (थे कि किसी जानवर का ख़ून लगा लाए) **थे, याकूब** (अलैहिस्सलाम) **ने** (देखा तो कुर्ता कहीं से फटा नहीं था तो) **कहा** (यूसुफ़ को भेड़िये ने बिल्कुल नहीं खाया) **बल्कि तुम ने अपने दिल से एक बात बना ली है, सो मैं सब्र ही करूंगा जिस में शिकायत का नाम न होगा, और जो बातें तुम बनाते हो उन में अल्लाह ही मदद करे** (कि इस वक़्त मुझे उन पर सब्र आजाए और आगे तुम्हारा झूट खुल जाए बस हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम सब्र करके बैठ रहे)(18) **और** (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का यह क़िस्सा हुआ कि उधर) **क़ाफ़िला आ निकला** (जो मिस्र को जा रहा था) **और उन्होंने अपना आदमी पानी लाने के लिए** (यहां कुए पर) **भेजा और उस ने अपना डोल डाला,** (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने डोल को पकड़ लिया जब डोल बाहर आया और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखा तो ख़ुश होकर) **कहने लगा बड़ी ख़ुशी की बात है यह तो बड़ा अच्छा लड़का निकल आया** (क़ाफ़िले वालों को पता चला तो वो भी ख़ुश हुए), **और उन को** (सौदागरी का) **माल समझ कर**

(यह सोच कर) **छुपा लिया** (कि कोई इन का वारिस न आजाए फिर इस को मिस्र ले जाकर बड़ी क़ीमत में बेचेंगे), **और जो कुछ वो कर रहे थे अल्लाह को सब पता था**(19) (उधर वो भाई भी आस-पास लगे रहते और कुंए में यूसुफ़ की ख़बर रखते थे खाना भी पहुंचा देते ताकि मरे नहीं और कोई इन्हें निकाल कर किसी दूसरे मुल्क में ले जाए और याकूब अलैहिस्सलाम को पता न चले, उस दिन जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुंए में न देखा अैर पास एक क़ाफ़िला देखा तो तलाश करते हुए वहां पहुंचे क़ाफ़िले वालों से पता लग गया तो उन से कहा कि हमारा गुलाम है भाग कर यहां आ गया था और अब हम इस को रखना नहीं चाहते) **और** (यह बात बना कर) **उन को बहुत ही कम क़ीमत पर** (क़ाफ़िले वालों को) **बेंच दिया यानी गिनती के कुछ सिक्कों के बदले में, और** (वजह यह थी कि) **ये लोग उन के कुछ क़द्रदान तो थे ही नहीं** (कि उन को अच्छा माल समझ कर बड़ी क़ीमत से बेंचते बल्कि वो तो उन को यहां से टालना चाहते थे)(20)।

وَ قَالَ الَّذِی اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِیْ مَثْوٰىهُ عَسٰۤى اَنْ یَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَ كَذٰلِكَ مَكَّنَّا
لِیُوْسُفَ فِی الْاَرْضِ ٞ وَ لِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِیْلِ الْاَحَادِیْثِ ؕ وَ اللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمْرِهٖ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
یَعْلَمُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَ لَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَیْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۲۲﴾ وَ رَاوَدَتْهُ الَّتِیْ هُوَ فِیْ بَیْتِهَا
عَنْ نَّفْسِهٖ وَ غَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَ قَالَتْ هَیْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّیْۤ اَحْسَنَ مَثْوَایَ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ
الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَ لَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَ هَمَّ بِهَا لَوْ لَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَ الْفَحْشَآءَ ؕ
اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِیْنَ ﴿۲۴﴾

आयत न० 21 से 24

और (क़ाफ़िले वाले यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भाइयों से ख़रीद कर मिस्र ले गये वहां अज़ीज़े मिस्र को बेंच दिया और) **जिस आदमी ने उन को मिस्र में ख़रीदा था** (यानी अज़ीज़) **उसने** (उन को अपने घर लाकर अपनी बीवी के सुपुर्द किया और) **अपनी बीवी से कहा इस को इज़्ज़त से रखना** (आम गुलामों की तरह नहीं बल्कि इन की ज़रूरत का इन्तिज़ाम रखना) **हो सकता है कि** (बड़ा होकर) **हमारे काम आए या हम इस को अपना बेटा बना लें** (मशहूर यह है कि यह इसलिए कहा कि उन के कोई औलाद न थी), **और हमने** (जिस तरह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपनी ख़ास महरबानी से उस वीरान कुंए से बचाया) **उसी तरह यूसुफ़ को इस मुल्क** (मिस्र) **में ताक़त** (यानी हुकूमत) **दी,**

और (यह बचाना इस लिए भी था) **ताकि हम उन को ख़्वाबों की ताबीर देना** (भी) **सिखादें, और अल्लाह तआ़ला अपने** (चाहे हुए) **काम पर पूरी क़ुदरत रखता है** (जो चाहे करदे) **लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते** (क्योंकि ईमान व यक़ीन वाले कम ही होते हैं)(21) **और जब वो अपनी जवानी** (की उम्र) **को पहुंचे हम ने उन को हिकमत और इल्म दिया** (मतलब यह कि पैग़म्बरी दी), **और हम नेक लोगों को इसी तरह बदला दिया करते** (हैं कि ग़ुलाम से बादशाह तक बना देते) **हैं**(22) **और** (यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम अज़ीज़े मिस्र के घर में चैन आराम से रहने लगे कि उसी दौरान यह क़िस्सा हुआ कि) **जिस औ़रत के घर में यूसुफ़ रहते थे वो** (उन पर आशिक़ हो गई और) **उन से अपना मतलब निकालने के लिए उन को फुसलाने लगी और** (घर के) **सारे दरवाज़े बन्द कर दिये और** (उनसे) **कहने लगी आजाओ तुम ही से कहती हूं, यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा** (एक तो यह ख़ुद बड़ा भारी गुनाह है) **अल्लाह बचाए** (दूसरे) **वो** (यानी तेरा शौहर) **मेरा पालने वाला** (और अहसान करने वाला) **है कि मुझ को कैसी अच्छी तरह रक्खा** (तो क्या मैं उस की इ़ज़्ज़त पे हाथ डालूं), **बेशक ऐसे नाइन्साफ़ों** (और अहसान भुलाने वालों) **को कामयाबी नहीं हुआ करती** (बल्कि बहुत से तो दुनिया ही में ज़लील और परीशान होते हैं वर्ना आख़रत में तो अज़ाब होना ही है)(23) **और उस औरत के दिल में** (बुराई का) **पक्का इरादा हो ही चुका था और उन को भी उस का कुछ कुछ ध्यान हो चला था** (जो कि बस से बाहर होता है इसलिए गुनाह नहीं जैसे गर्मी के रोज़े में पानी की तरफ़ झुकाव चाहे रोज़ा तोड़ने का वसवसा तक भी नहीं आता, लेकिन) **अगर अपने रब की दलील** (यानी उस काम के गुनाह होने की दलील) **को** (जो कि शरीअ़त का हुक्म है) **उन्होंने न देखा होता** (यानी उन को शरीअ़त का इल्म न होता) **तो ज़्यादा झुकाव हो सकता था** (मगर) **हम ने इस तरह उन को इल्म दिया, ताकि हम उन से छोटे और बड़े गुनाह को दूर रक्खें** (यानी इरादे से भी बचा लिया और बुराई से भी, क्योंकि) **वो हमारे चुने हुए बन्दों में से थे**(24)।

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत के लिए गुनाह के वसवसे और ख़्याल को मुआफ़ कर दिया है जबकि वो उस पर अमल न करें। (बुख़ारी)

وَ اسْتَبَقَا الْبَابَ وَ قَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّ اَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا
اِلَّاۤ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۵﴾ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَ شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ
قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَ هُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۲۶﴾ وَ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَ هُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۲۷﴾
فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ﴿۲۸﴾ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٜ وَ
اسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ۖۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿۲۹﴾ ع

आयत न० 25 से 29

और (जब उस औरत ने फिर वो ही कोशिश की तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम वहां से जान बचा कर भागे और वो उन को पकड़ने के लिए पीछे चली और) **वो दोनों आगे पीछे दरवाज़े की तरफ़ दौड़े और** (दौड़ने में जो उन को पकड़ना चाहा तो) **उस औरत ने उन का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया** (यानी उसने कुर्ता पकड़ कर खींचना चाहा और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम आगे की तरफ़ दौड़े तो कुर्ता फट गया मगर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम दरवाज़े से बाहर निकल गये) **और** (औरत भी साथ थी तो) **दोनों ने** (अचानक) **उस औरत के शौहर को दरवाज़े के पास** (खड़ा) **पाया, औरत** (शौहर को देख कर सटपटाई और फ़ौरन बात बना कर) **बोली कि जो आदमी तुम्हारी बीवी के साथ बुरे काम का इरादा करे उस की सज़ा सिवाए इसके और क्या** (हो सकती) **है कि जेल ख़ाना भेजा जाए या और कोई दर्दनाक सज़ा हो(25) यूसुफ़** (अ़लैहिस्सलाम) **ने कहा** (कि यह जो मुझ पर इल्ज़ाम लगाती है बिल्कुल झूटी है बल्कि बात इस के उलट है) **ये ही मुझ से अपना मतलब निकालने के लिए मुझ को फुसलाती थी और** (इस मौक़े पर) **उस औरत के ख़ानदान में से एक गवाह ने** (जो कि दूध पीता बच्चा था और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मोजिज़े से बोल पड़ा और आप की बेगुनाही पर) **गवाही दी** (और कहा) **कि इन का कुर्ता** (देखो कहां से फटा है) **अगर आगे से फटा है तो औरत सच्ची है और ये झूटे हैं(26) और अगर वो कुर्ता पीछे से फटा है तो औरत झूटी है और ये सच्चे हैं(27) सो जब** (अज़ीज़ ने) **उन का कुर्ता पीछे से फटा हुआ देखा** (औरत से) **कहने लगा कि यह तुम औरतों की चालाकी है, बेशक तुम्हारी चालाकियां बड़ी** (सख़्त होती) **हैं(28)** (फिर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से कहने लगा) **ऐ यूसुफ़ इस बात को जाने दो** (यानी इस का चर्चा मत करना) **और** (औरत से कहा कि) **ऐ औरत तू** (यूसुफ़ से) **अपनी ग़लती की मुआफ़ी मांग बेशक सारी ग़लती तेरी ही है(29)।**

नोटः- औरत के इल्ज़ाम लगाने पर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपनी सफ़ाई के लिए एक दूध पीते बच्चे का नाम पेश किया जो वहां पालने में लेटा था अल्लाह की क़ुदरत से वो बच्चा बोल उठा और फिर गवाही भी दलील के साथ दी जो समझ में आने वाली थी। तो इस करामत और दलील से उस आदमी को पूरा यक़ीन हो गया कि औरत ही ग़लती पर है और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम बेक़ुसूर हैं।

وَ قَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ۝٣٠ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَ اَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّ اٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّ
قَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا مَلَكٌ
كَرِيْمٌ ۝٣١ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ؕ وَ لَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَ لَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ
لَيُسْجَنَنَّ وَ لَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝٣٢ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ ۚ وَ اِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ
كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَ اَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝٣٣ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۝٣٤ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ۝٣٥ ع

आयत न० 30 से 35

और कुछ औरतों ने जो कि शहर में रहती थी यह बात कही कि अज़ीज़ की बीवी अपने ग़ुलाम को उससे अपना (नाजाइज़) **मतलब निकालने के लिए फुसलाती है** (कैसी कमीना हरकत है कि ग़ुलाम पर मरती है) **उस ग़ुलाम की मुहब्बत उस के दिल में जम गई है, हम तो उस को खुली ग़लती में देखते हैं(30) सो जब उस औरत ने उन औरतों के बुरा कहने**(की बात) **को सुना किसी के हाथ उन को** (दावत पर) **बुला लिया और उन के वास्ते क़ालीन तकिया लगाया और** (जब वो आईं और उन के सामने बहुत से खाने और फल रक्खे कुछ चीज़ें चाक़ू से काटकर खाने की थीं इसलिए) **हर एक को उनमें से एक चाक़ू** (भी) **दे दिया** (जो देखने में तो फल काटने का बहाना था असल बात कुछ और थी जो आगे आती है) **और** (यह सब सामान ठीक करने के बाद यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को जो किसी दूसरे मकान में थे) **कहा कि ज़रा इन के सामने तो आजाओ** (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम यह समझ कर कोई सही काम होगा बाहर आ गये) **सो औरतों ने जो उन को देखा तो** (उन की ख़ूबसूरती से) **दंग रह गई और** (ऐसे होश खोए कि)

अपने हाथ काट लिये (चाकू से फल काट ही रहीं थी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देख कर ऐसी बदहवास हुईं कि चाकू हाथ पर चल गया) **और कहने लगीं अल्लाह की पनाह यह आदमी कोई इन्सान नहीं, यह तो कोई फ़रिशता** (है मतलब यह था कि ऐसा नूरानी तो फ़रिशता ही हो सकता) **है(31) वो औ़रत बोली तो** (देख लो) **वो आदमी ये ही है जिस के बारे में तुम मुझ को बुरा भला कहती थीं** (कि अपने ग़ुलाम को चाहती है), **और बेशक मैंने इससे अपना मतलब निकालने के लिए इस पर डोरे डाले मगर यह पाक साफ़ रहा, और** (फिर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को डराने और सुनाने को कहा कि) **अगर आगे मेरा कहना न मानेगा** (जैसा कि अब तक नहीं माना) **तो बेशक जेल ख़ाना भेज दिया जाएगा और बेइ़ज़्ज़त भी होगा(32)** (वो औरतें भी कहने लगीं यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से कि यह औरत तुम पर अहसान करने वाली है इससे ऐसी बेपरवाई ठीक नहीं जो यह कहे उस को मानना चाहिए) **यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम) **ने** (ये बातें सुनी कि ये तो सब की सब उसी का साथ देने लगीं तो अल्लाह तआ़ला से) **दुआ़ की या रब मेरे जिस** (नाजाइज़) **काम की तरफ़ ये औरतें मुझे बुला रही हैं उससे तो जेल ख़ाने में जाना ही मुझ को ज़्यादा पसन्द है, और अगर आप उन की चालों से मुझे न बचाएंगे तो मेरा दिल भी उन की तरफ़ खिंचने लगेगा और नासमझी का काम कर बैठूंगा(33) सो उन की दुआ़ उन के रब ने क़ुबूल की और उन औरतों की चालों से उन्हें बचाया, बेशक वो** (दुआ़ओं का) **बड़ा सुनने वाला** (और उन के हाल का) **अच्छी तरह जानने वाला है(34) फिर** (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पाक दामनी की) **बहुत सी निशानियां देखने के बाद** (जिससे ख़ुद तो इस का पूरा यक़ीन हो गया मगर लोगें में चर्चा होने की वजह से) **उन लोगों ने** (यानी अज़ीज़ और उस के साथियों ने) **ये ही बेहतर समझा कि उन को एक मुद्दत तक क़ैद में रक्खें** (इसलिए जेल ख़ाना भेज दिये गये)(35)

وَ دَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَاۤ اِنِّیۡۤ اَرٰىنِیۡۤ اَعۡصِرُ خَمۡرًا ۚ وَ قَالَ الۡاٰخَرُ اِنِّیۡۤ اَرٰىنِیۡۤ اَحۡمِلُ فَوۡقَ
رَاۡسِیۡ خُبۡزًا تَاۡکُلُ الطَّیۡرُ مِنۡهُ ؕ نَبِّئۡنَا بِتَاۡوِیۡلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىکَ مِنَ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۳۶﴾ قَالَ لَا یَاۡتِیۡکُمَا طَعَامٌ تُرۡزَقٰنِهٖۤ اِلَّا
نَبَّاۡتُکُمَا بِتَاۡوِیۡلِهٖ قَبۡلَ اَنۡ یَّاۡتِیَکُمَا ؕ ذٰلِکُمَا مِمَّا عَلَّمَنِیۡ رَبِّیۡ ؕ اِنِّیۡ تَرَکۡتُ مِلَّۃَ قَوۡمٍ لَّا یُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰهِ وَ هُمۡ
بِالۡاٰخِرَۃِ هُمۡ کٰفِرُوۡنَ ﴿۳۷﴾ وَ اتَّبَعۡتُ مِلَّۃَ اٰبَآءِیۡۤ اِبۡرٰهِیۡمَ وَ اِسۡحٰقَ وَ یَعۡقُوۡبَ ؕ مَا کَانَ لَنَاۤ اَنۡ نُّشۡرِکَ بِاللّٰهِ مِنۡ
شَیۡءٍ ؕ ذٰلِکَ مِنۡ فَضۡلِ اللّٰهِ عَلَیۡنَا وَ عَلَی النَّاسِ وَ لٰکِنَّ اَکۡثَرَ النَّاسِ لَا یَشۡکُرُوۡنَ ﴿۳۸﴾ یٰصَاحِبَیِ السِّجۡنِ

ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ
اٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ
وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّاۤ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَ اَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ
فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ﴿٤١﴾ وَ قَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ
رَبِّكَ ؗ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ﴿٤٢﴾

आयत न० 36 से 42

और यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) **के साथ** (यानी उसी ज़माने में) **और भी दो ग़ुलाम** (बादशाह के) **जेल ख़ाने में दाख़िल हुए** (जिन में एक बादशाह को शराब पिलाने वाला साक़ी था दूसरा रोटी पकाने वाला बावर्ची, और उन की क़ैद की वजह यह थी कि उन पर इल्ज़ाम था कि उन्होंने खाने में और शराब में ज़हर मिला कर बादशाह को दिया है उन के मुक़द्दमे की जांच चल रही थी इसलिए क़ैद कर दिये गये, उन्होंने जो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम में बुज़ुर्गी की निशानियां देखीं तो) **उन में से एक ने** (एक दिन हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से) **कहा कि मैं अपने आप को** (ख़्वाब में) **देखता हूं कि** (जैसे) **शराब** (बनाने के लिए अंगूर का रस) **निचोड़ रहा हूं** (और बादशाह को वो शराब पिला रहा हूं), **और दूसरे ने कहा कि मैं अपने को** (ख़्वाब में) **इस तरह देखता हूं कि** (जैसे) **अपने सर पर रोटियां लिये जाता हूं** (और) **उसमें से परिन्दे** (नोच नोच कर) **खाते हैं, हम को इस ख़्वाब की** (जो हम दोनों ने देखा है) **ताबीर बताइये आप हम को नेक आदमी दिखाई देते हैं**(36) **यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम) **ने** (जब यह देखा कि ये लोग ऐतक़ाद के साथ मेरी तरफ़ झुकाव रखते हैं तो चाहा कि उन को सब से पहले ईमान की दावत दी जाए इसलिए अपना पैग़म्बर होना एक मोजिज़े से साबित करने के लिए) **कहा कि** (देखो) **जो खाना तुम्हारे पास आता है जो कि तुम को खाने के लिए** (जेल ख़ानों में) **मिलता है मैं उस के आने से पहले उस की असलीयत तुम को बता दिया करता हूं** (कि वो चीज़ आएगी और ऐसी-ऐसी होगी, और) **यह बता देना उस इल्म की वजह से है जो मुझ को मेरे रब ने सिखाया** (है यानी मुझ को वही से पता चल जाता है, तो यह एक मोजिज़ा है जो पैग़म्बरी की निशानी) **है, मैंने तो उन लोगों का दीन** (पहले ही से) **छोड़ रक्खा है जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाए और वो लोग आख़रत का भी इनकार करते हैं**(37) **और मैंने अपने इन** (बुज़ुर्गों) **बाप दादों का दीन अपना रक्खा है इब्राहीम और इसहाक़ और याक़ूब**

(अलैहिमुस्सलाम) **का,** (और इस दीन की ज़रूरी बात ये है कि) **हमारा काम नहीं है कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को** (इबादत में) **साझी बनाएं, यह** (अल्लह० को एक मानना) **हम पर और** (दूसरे) **दूसरे लोगों पर** (भी) **अल्लाह तआ़ला की एक महरबानी है** (कि इसी की वजह से दुनिया व आख़रत की कामयाबी है) **लेकिन बहुत से लोग** (इस नेमत का) **शुक्र** (अदा) **नहीं करते** (यानी तौहीद को नहीं अपनाते)(38) **ऐ जेलख़ाने के साथियों** (ज़रा सोच कर बताओ कि इबादत के वास्ते) **बहुत से माबूद अच्छे हैं या एक सच्चा माबूद जो सब से ज़बरदस्त है वो अच्छा(39) तुम लोग तो अल्लाह को छोड़ कर सिर्फ़ नाम की चीज़ों की इबादत करते हो जिन को तुम ने और तुम्हारे बाप दादों ने** (आप ही) **ठहरा लिया है अल्लाह तआ़ला ने तो उन** (के माबूद होने) **की कोई दलील नहीं भेजी,** (और) **हुक्म अल्लाह ही का है, उस ने यह हुक्म दिया है कि सिवाए उसके और किसी की इबादत मत करो** (और सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करना)**, ये ही सीधा तरीक़ा है लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते(40) ऐ जेलख़ाने के साथियों** (अपने ख़्वाबों की ताबीर सुनो) **तुम में एक तो** (जुर्म से बरी हो कर अपने काम पर लौटेगा और) **अपने मालिक** (यानी बादशाह) **को शराब पिलाया करेगा और दूसरा** (मुजरिम ठहरा कर) **फांसी दिया जाएगा और उसके सर को परिन्दे** (नोच-नोच कर) **खांएगे, और जिस बारे में तुम पूछते थे वो फ़ैसला** (इसी तरह) **हो चुका** (बस ऐसा ही हुआ)(41) **और** (जब वो लोग जेल ख़ाने से जाने लगे तो) **जिस आदमी के बारे में गुमान था कि छूट जाएगा उससे यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि अपने मालिक के सामने मेरा भी ज़िक्र करना** (कि एक आदमी बेक़ुसूर जेल में है, उसने वादा कर लिया) **फिर उस को अपने मालिक से** (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम) **का ज़िक्र करना शैतान ने भुला दिया तो** (इस वजह से) **जेल ख़ाने में और भी कुछ साल उन का रहना हुआ(42)**

नोटः- यहां मालूम हुआ कि किसी मुसीबत से छुटकारे के लिए किसी आदमी को कोशिश का वास्ता बनाना तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं।

وَ قَالَ الْمَلِكُ اِنِّیْۤ اَرٰی سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ یَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّ سَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّ اُخَرَ یٰبِسٰتٍ ؕ یٰۤاَیُّهَا
الْمَلَاُ اَفْتُوْنِیْ فِیْ رُءْیَایَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْیَا تَعْبُرُوْنَ ﴿۴۳﴾ قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَ مَا نَحْنُ بِتَاْوِیْلِ الْاَحْلَامِ
بِعٰلِمِیْنَ ﴿۴۴﴾ وَ قَالَ الَّذِیْ نَجَا مِنْهُمَا وَ ادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِیْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ﴿۴۵﴾ یُوْسُفُ اَیُّهَا

الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّ سَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّ اُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْٓ
اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۶﴾ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا
قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿۴۷﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا
تُحْصِنُوْنَ ﴿۴۸﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَ فِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَ قَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ
فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ
عَلِيْمٌ ﴿۵۰﴾

आयत न० 43 से 50

और (कुछ सालों के बाद मिस्र के) **बादशाह ने** (भी एक ख़्वाब देखा और दरबारियों को जमा करके उन से) **कहा कि मैं** (ख़्वाब में क्या) **देखता हूं कि सात गाय मोटी ताज़ी हैं जिन को सात दुबली पतली गाय खा गईं और सात बालियां हरी हैं और उनके सिवा सात और हैं जो कि सूखी हैं** (और सूखी बालों ने उसी तरह उन सात हरी पर लिपट कर उन को सुखा दिया), **ऐ दरबार वालो अगर तुम** (ख़्वाब की) **ताबीर दे सकते हो तो मेरे इस ख़्वाब के बारे में मुझ को जवाब दो(43) वो लोग कहने लगे कि** (एक तो यह कोई ख़्वाब ही नहीं जिससे आप फ़िक्र में पड़े) **यूं ही परीशान सोच विचार हैं, और** (दूसरे) **हम लोग** (कि हुकूमत के कामों में माहिर हैं) **ख़्वाबों की ताबीर का इल्म भी नहीं रखते(44) और उन दो क़ैदियों में से** (एक) **जो छूट गया था** (वो दरबार में हाज़िर था) **उस ने कहा और बहुत दिनों के बाद उस को** (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बात) **याद आई मैं इस** (ख़्वाब) **की ताबीर की ख़बर लाए देता हूं आप लोग मुझ को ज़रा जाने की इजाज़त दीजिए(45)** (बस दरबार से इजाज़त हुई और वो जेल ख़ाने में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास पहुंचा और जाकर कहा) **ऐ यूसुफ़** (ऐ हर बात में) **सच्चे आप हम लोगों को इस** (ख़्वाब) **का मतलब बताइये कि सात गाय मोटी हैं उन को सात दुबली गाय खा गईं और सात बालियां हरी है और इसके सिवा** (सात) **सूखी भी हैं** (कि उन सूखी के लिपटने से वो हरी भी सूखी हो गई आप ताबीर बताइये) **ताकि मैं** (जिन्होंने मुझ को भेजा है) **उन लोगों के पास लौट कर जाऊं** (और बयान करूं) **ताकि** (इस की ताबीर और उससे आप का हाल) **उन को भी पता चल जाए** (ताबीर के हिसाब से काम करें और आप की रिहाई की कोई सूरत निकले)**(46) आप ने कहा कि** (उन सात मोटी गायों और सात हरी बालों का मतलब पैदावार और बारिश के साल हैं बस) **तुम**

सात साल लगातार (ख़ूब) **अनाज बोना फिर जो फ़सल काटो उस को बालियां ही में रहने देना** (ताकि घुन का कीड़ा न लग जाए) **हां मगर थोड़ा सा जो तुम्हारे खाने में** (काम) **आए** (वो बालियों में से निकाला ही जाएगा)(47) **फिर उस** (सात साल) **के बाद सात साल ऐसे सख़्त** (और सूखे के) **आएंगे जो कि उस** (अनाज के सारे) **भन्डार को खाजाएंगे जिस को तुम ने इन सालों के वास्ते जमा करके रक्खा होगा हां मगर थोड़ा सा** (बचेगा) **जो** (बीज के वास्ते) **बचाकर रक्खोगे** (और इन सूखी बालियों और दुबली गायों से इशारा उन सात सूखे के सालों की तरफ़ है)(48) **फिर इस** (सात साल) **के बाद एक साल ऐसा आएगा जिस में लोगों के लिए ख़ूब बारिश होगी और उसमें** (इस वजह से बहुत अंगूर पैदा होंगे) **रस भी निचोंडेगें** (और शराबें पियेंगे)(49) **और** (वो आदमी ताबीर लेकर दरबार में पहुंचा और जाकर बयान किया) **बादशाह ने** (जो सुना तो आप के इल्म व कमाल को मान गया और) **हुक्म दिया कि उन को मेरे पास लाओ** (बस यहां से बादशाह का आदमी चला) **फिर जब उन के पास** (वो) **आदमी पहुंचा** (और बुलाए जाने की बात बताई तो) **आप ने कहा कि** (जब तक मेरा उस इल्ज़ाम से बरी होना और बेक़ुसूर होना साबित न हो जाएगा मैं न जाऊंगा) **तू अपनी सरकार के पास वापस लौट जा फिर उन से पूछ कि** (कुछ तुम को पता है) **उन औरतों का क्या क़िस्सा है जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे** (मतलब यह था कि उन को बुला कर उस क़िस्से की जांच पड़ताल की जाए जिस में मुझ को क़ैद किया गया), **मेरा रब उन औरतों की चालाकियों को अच्छी तरह जानता है** (यानी अल्लाह को तो पता ही है कि ज़ुलेख़ा का मुझ पर झूटा इल्ज़ाम लगाना एक चाल थी मगर लोगों को भी सच्चाई का पता चल जाए, बस बादशाह ने उन औरतों को बुलवा लिया)(50)

नोटः- इतनी मुद्दत जेल में रहने के बाद रिहाई के वक़्त अपने इल्ज़ाम की सफ़ाई की शर्त रखना हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सब्र व तहम्मुल व पैग़म्बराना शान की बड़ी मिसाल है।

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ
الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ٞ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۵۱﴾ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ
بِالْغَيْبِ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿۵۲﴾

आयत न० 51 से 52

(बादशाह ने उन औरतों को बुलाकर उन से) **कहा कि तुम्हारा क्या क़िस्सा है जब तुम ने यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम) **से अपना मतलब निकालने की कोशिश की** (यानी एक ने मतलब निकालना चाहा और दूसरी औरतों ने उस की मदद की यह बात शायद इसलिए कही ताकि मुजरिम सुन ले कि बादशाह को असली बात का पता चल गया है), **औरतों ने जवाब दिया कि अल्लाह की पनाह हम को उन में ज़रा भी तो बुराई की बात नहीं दिखाई दी** (वो बिल्कुल पाक-साफ़ हैं), **अज़ीज़ की बीवी** (जो कि हाज़िर थी) **कहने लगी कि अब तो सच बात** (सब पर) **खुल ही गई** (अब छुपाना बेकार है सच ये ही है कि) **मैंने उन को अपने मतलब के लिए फुसलाने की कोशिश की थी** (न कि उन्होंने जैसा मैंने इल्ज़ाम लगा दिया था) **और बेशक वो ही सच्चे हैं**(51) (बस सारी बातों के साथ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बेकुसूर होने की ख़बर को उन के पास भेजा, उस वक़्त) **यूसुफ़** (अ़लैहिस्सलाम) **ने कहा कि यह सब कुछ** (मैंने) **इस वास्ते किया ताकि अज़ीज़ को** (यह बात पूरे) **यक़ीन के साथ पता चल जाए कि मैंने उस के पीछे उस की आबरू पर हाथ नहीं डाला और यह** (भी पता चल जाए) **कि अल्लाह तआ़ला धोकेबाज़ों की चाल को चलने नहीं देता** (जैसे ज़ुलेख़ा ने अज़ीज़ के साथ धोका किया कि दूसरे पर नज़र की अल्लाह ने उस की पोल खोल दी)(52)।

नोटः- यहां यह बात मालूम हुई कि आलिमों और क़ौम के बड़ों को ऐसी बातों से भी बचना चाहिए जिन से लोगों को उन के बारे में किसी बदगुमानी या शक शुबह का अन्देशा हो कि ऐसी सूरत में दावत व नसीहत के काम में रूकावट पैदा होती है। जैसा कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने आप को हर इल्ज़ाम से पाक साफ़ साबित करना ज़रूरी समझा।